

# Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



Mar. misc. 3

14 B 41





गायनप्रकाश

हायंथभाऊवास्त्रीअष्टपुत्रेयाणी

पुणेंयेथे

ज्ञानप्रकाश डापरवान्यांत

द्यापिला.

सन् १८५० इसवी.

---



## प्रस्तावना

श्रीगायनप्रकाशनामकग्रंथभाऊशास्त्रीअष्टपुत्रे  
वांयीकर याणीकेलात्यांतप्रथमगायनशास्त्रांतीलपदार्थसम-  
जण्याविषयींअनुक्रमणिकाकेलीआहे पुढे गायनांतील प-  
दार्थ सामान्यसमजण्याविषयींआर्याहृत्तानेपरिभाषाकेली  
आहे याग्रंथाविषयींसंस्कृतग्रंथाधारग्रंथ. संगीतरलाकर १  
संगीतदर्पण २ संभाषितशार्द्धधर ३ व प्राकृतग्रंथसत्सैया  
४ आणिपुराणांतरीय वाक्यावस्तुन संस्कृताची महादीयाशा  
स्त्रांतीलपदार्थसमजण्याविषयींकेलीआहे हाग्रंथ पाहणा-  
यांस शास्त्रानुगम समजण्याविषयींकम जोबांधलातो अव-  
लोकनकेला असतां सामान्यज्ञान होण्याविषयींकांहींयेक  
संशय येणार नाहीं. याग्रंथांत संग्रह बङ्गुत शास्त्राची परिभाषा  
व रागांचीसूचें व त्यात्या, रागांच्यासुरावर्तीयारवेरीज संस्कृता-  
धारावस्तुन सप्रमाण लिहिल्याआहेत व व्यवहारिकराग जे  
हल्दीगातान त्याच्याहीसुरावर्तीप्रस्तुतप्रमाणावस्तुन केल्या आ  
हेत. सारांश हाग्रंथ पाहिला असतां गायनाविषयींप्रकाश होई-  
ल. कदाचीत हें पाहून गातां जरीन आलं तथापि शास्त्रीयज्ञान  
निश्चयें कस्तु होईल. हाग्रंथपाहिला असतां ग्रंथकर्त्त्यांचे  
ज्ञानजें आहेतें समजेल ह्याणून मर्वानी आदर्शकस्तु. वाचावा-

## अनुक्रमणिका.

### १ प्रस्तावना.

१ अनुक्रमणिका.

१ पंडितमान्यता.

१ परिभाषाप्रकरण.

पृष्ठ.

पञ्चादिस्वरेत्यत्ती. ११

म्बरजसंज्ञावर्णन. १२

षड्गादिपदाचीव्यु-  
त्यत्तीवभाषकजाती.

जातिवर्णन. १४

शरीरांतस्वरउत्पन्नहो-  
ण्याचापुरुष. १५

स्वरापास्त्वनस्वरेत्यनव-  
र्णन. १६

स्वरावरउदात्तादिगुणव. १०

मूर्छनाभेदसमजण्या-  
चा पुरुष. १८

संस्कृतमतानुयायीराग. १९

त्याचरागांचाक्रम. २०

संस्कृतरागाचेंकोषक. २१

रागतालप्रशंसा. २२

गाण्यास १४ दोषव-

द्युगुणवर्णन. २३

गम्भकवतालव अला-  
प याचेलक्षण. २४

### पृष्ठ

शब्दउत्पन्नहोण्याचा-  
क्रम.

स्वरावरहस्यादिसंज्ञा. २  
वर्णाचीस्थाने. ३

सप्तस्वरोत्यत्ति. आणि-  
रागसंभवासकारण. ४

स्वरसंज्ञावर्णन. ५

ग्रामविचार. ६

ग्रामलक्षण. ७

मूर्छनालक्षणआणि-  
श्रुतिसंरच्यानियम. ८

श्रुतीसमजण्याचेंकोषक. ९

मूर्छनाभेदवर्णन. व अ-  
न्वर्धसंज्ञा. १०

अनुक्रमणिका.

पृष्ठ.

|  |    |
|--|----|
| आलापस्वरशब्दविवरण.                                 | २५ |
| गुरु१ लघु२ इति४-याचेंलक्षण.                        | २६ |
| येक्कातालाचेंवर्णन.                                | २७ |
| विवटतालगतीचेंवर्णन.                                | २८ |
| आदितालप्रकारवर्णन.                                 | २९ |
| समेच्यागतीचेंवर्णन.                                | ३० |
| अत्थाच्यागतीचेंवर्णन.                              | ३१ |
| हीपचंदीवगजलयाचीगतवधमाराचीदुगणगत.                   | ३२ |
| विलंदवधुपदाचेवटवसुरव्यसाहारागचेंवर्णन.             | ३३ |
| प्रत्येकरागाच्यास्त्रियावर्णन                      | ३४ |
| साहारागवस्त्रियांच्यानावाचेंकोष्ठक.                | ३५ |
| सक्करापासूनसंध्याकाळपर्यंतजेरागगातातत्यांचीसंरव्या | ३६ |
| रानीरागगावयाचेत्यांचीसंरव्या                       | ३८ |

|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| भैरवरागचेंस्वरूप.                   | ४० |
| भैरवाचागायननियम                     | ४१ |
| भैरवाच्यास्वराचेंकोष्ठक             | ४२ |
| भैरवाचेंनवीनधुपदवर्णन.              | ४३ |
| भैरवीस्वरूपवर्णन.                   | ४४ |
| भैरवीस्वराचानियम-आणिकोष्ठक.         | ४५ |
| भैरवीचेंप्रसिद्धपदवत्याजवरस्वरनियम. | ४६ |
| बंगालीस्वरूपवर्णन.                  | ४७ |
| बंगालीच्यास्वराचेंकोष्ठक.           | ४८ |
| बैरारीचेंस्वरूपवर्णन.               | ४९ |
| बैरारीच्यास्वरनियमाचेंकोष्ठक.       | ५० |
| मधुमाधवीस्वरूप                      | ५१ |
| मधुमाधवीच्यास्वरचेंकोष्ठक.          | ५२ |

## अनुक्रमणिका.

| पृष्ठ. |                                    | पृष्ठ. |                              |
|--------|------------------------------------|--------|------------------------------|
| ५३     | सैंधवीस्वरूपवर्णन.                 | ७१     | धनाश्रीन्वेस्वरकोष्ठक.       |
| ५४     | सैंधवरागिणीन्वेस्वरकोष्ठक.         | ७२     | असावरीस्वरूपवर्णन.           |
| ५५     | मेघमल्लारवर्णन.                    | ७३     | असावरीन्वेस्वरकोष्ठक.        |
| ५६     | मेघमल्लारस्वरूपवर्णन.              | ७४     | मारुस्वरूपवर्णन.             |
| ५७     | मेघमल्लाराच्यास्वरान्वेको<br>ष्ठक. | ७५     | वसंतस्वरूपवर्णन.             |
| ५८     | भूपालीरागिणीस्वरूपवर्ण.            | ७६     | वसंतान्वेस्वरवर्णन.          |
| ५९     | भूपालीन्वेस्वरकोष्ठक.              | ७७     | मालवश्रीस्वरूपवर्णन.         |
| ६०     | गुजरीन्वेस्वरूपवर्णन.              | ७८     | मालवश्रीन्वास्वरनियम.        |
| ६१     | गुर्जरीन्वेस्वरकोष्ठकवर्णन.        | ७९     | हीपकरागवर्णन.                |
| ६२     | देसकारस्वरूपवर्णन.                 | ८०     | शामकल्याणस्वरूपवर्णन.        |
| ६३     | देसकारान्वेस्वरकोष्ठक.             | ८१     | शामरागाचीस्वरावर्तवर्ण.      |
| ६४     | मल्लारस्वरूपवर्णन.                 | ८२     | नटरागस्वरूपवर्णन.            |
| ६५     | मल्लारिस्वरकोष्ठक.                 | ८३     | नटरागाचीस्वरावर्त.           |
| ६६     | तनकस्वरूपवर्णन.                    | ८४     | कर्णाइकरागवर्णन.             |
| ६७     | श्रीरागवर्णन.                      | ८५     | कर्णाटकरागाचीस्वरा-<br>वर्त. |
| ६८     | श्रीरागस्वरूपवर्णन.                | ८६     | केदाररागस्वरूपवर्णन.         |
| ६९     | श्रीरागान्वेस्वरकोष्ठक.            | ८७     | केदाररागाचीस्वरावर्त.        |
| ७०     | धनाश्रीस्वरूपवर्णन.                | ८८     | कामादीस्वरूपवर्णन.           |

## अनुक्रमणिका.

पृष्ठ.

पृष्ठ.

|                        |     |                           |     |
|------------------------|-----|---------------------------|-----|
| कामोदीचीस्वरावर्ती.    | ८९  | कुकबस्वरकोष्ठक.           | १०२ |
| मालकंसरागस्त्रूपवर्णन. | ९०  | हिंडोलस्वरूपवर्णन.        | १०३ |
| मालकंसवर्णन.           | ९१  | हिंडोलस्वरकोष्ठक.         | १०४ |
| मालकंसरागाचीस्वरावर्ती | ९२  | हिंडोलस्वरवर्जावर्जवर्ण.  | १०५ |
| तोडीस्वरूपवर्णन.       | ९३  | रामकलीस्वरूपवर्णन.        | १०६ |
| तोडीचीस्वरावर्ती.      | ९४  | रामकरीस्वरकोष्ठक.         | १०७ |
| गौरीचेस्वरूपवर्णन.     | ९५  | पटमंजरीवदेवसारव-          |     |
| स्वरावर्तवर्णन.        | ९६  | स्वरूपवर्णन.              | १०८ |
| गुणकरीस्वरूपवर्णन.     | ९७  | ललंतस्वरूपवर्णन.          | १०९ |
| गुणकरीचेस्वरकोष्ठक.    | ९८  | ललतांचेस्वरकोष्ठक.        | ११० |
| खंबावतीस्वरूपवर्णन.    | ९९  | वेलावलीस्वरूपवर्णन.       | १११ |
| खंबावतीस्वरकोष्ठक.     | १०० | वेलावलीस्वरकोष्ठक.        | ११२ |
| कुकबस्वरूपवर्णन.       | १०१ | याजपुढेझवपदादिका-         |     |
|                        |     | चीवर्णनावव्यावहारिक-      |     |
|                        |     | रागांच्यास्वरावर्तीवरागा- |     |
|                        |     | तीलप्रसिद्धप्रसिद्धचीजा   |     |
|                        |     | लिहित्याआहेत.             |     |

पंडितां च्यामान्यता-

|                               |                      |
|-------------------------------|----------------------|
| १ अंबकशास्त्रीशालिग्राग       | १ अंबकगोसावीनासीककर- |
| स्वहस्ताक्षर-                 | स्वहस्ताक्षर-        |
| १ मोरेश्वरशास्त्रीसाढेहस्तुर- | १ नानाथेउरकर-        |
| रहुइ-                         | १ अमृतरावभाऊ शिंही-  |
| १ नीलकंठशास्त्रीभट-           | १ विनायकरावभिकाजीका- |
| १ रघुनाथशास्त्रीपर्वते-       | न्हेरे-              |
| १ नरसिंकाचार्यरामानुज-        | १ मनाजीकोडीनकर-      |
| १ धोंडशास्त्रीडेंगवेकर-       | <hr/>                |
| १ गोपालाचार्यश्रीकरहाटकर-     |                      |
| १ विनायकशास्त्रीज्योतिषी-     |                      |
| १ चिन्नाचार्यमालरवेडकर-       |                      |
| १ बाळशास्त्रीमाटे-            |                      |
| १ विष्णुजोशीअडिवरेकर-         |                      |
| १ कृष्णशास्त्रीराजवाडे-       |                      |
| १ गोविंदशास्त्रीसाढे-         |                      |
| १ बजाचार्य बिडकर-             |                      |
| १ जनार्दनाचार्यवळे-           |                      |
| १ रामचंद्रशास्त्रीजानवेकर-    |                      |
| १ नानागोसावीजुन्मरकर-         |                      |

## परिभाषाप्रकरण.

श्रीगणेशायनमः ॥ अविघमस्तु ॥ श्रीमद्नंतशायनहो  
नमुनीमीगायनप्रकाशअसा ॥ करितोऽथजनालातत्वज्ञानास  
रात्रिचंडजसा ॥ १ ॥

॥ प्रथम हीगायनाचीपरिभाषा गायनांतील पदार्थ कि-  
तीआहेत हें समजण्याकरितां आर्यावृत्ताने अनुक्रम केला  
आहेतोयेण प्रमाणे.

आर्या.

स्वरसातग्रामत्रययेकवीसतशामूर्खनाहोती ॥ बावी  
सश्रुतिभेदें रागघडेरागिण्याबहूघडती १ षड्क्रषभ  
गांधारमध्यमपंचमहि धैवतनिषाद ॥ सामूनि हेग्रामअस  
तीगांधारग्रामस्करजनीस्करवद २ षड्क्रतुःश्रुतिक्रषभभ्रिति  
श्रुतिगांधारद्विश्रुतीआहे ॥ मध्यमचतुःश्रुतीहोपंचमहित  
सास्कपूर्णहाराहे ३ त्रिश्रुतिधैवतहोतोनिषादहोद्विश्रुतिक्र  
भानेया ॥ बावीसश्रुतिपावेन्यूनाधिक्यें स्करागहोउद्या ४  
ज्यान्व्यान अधोभागीशब्दश्रुतिरवरजहोयतोसाच ॥ षट्स्था  
नांतेस्पर्शनिहोतोजोशब्दषड्हासाच ५ षड्मयूरवदत  
सेक्रषभवृषभही अजाविगांधारा ॥ मध्यमक्रौंचस्क को  
किलपंचमहोपुष्यकाळिअवधारा ६ धैवत अश्चहेषि  
तकुंजरकरितोनिषादशब्दातें ॥ हाभेदव्यवहारिकजा

?

## प्रकर्ण? संस्कृत

॥यदुक्तं ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्म ग्रंथिश्वयोभनः ॥

॥तन्मध्ये संस्थितः प्राणः प्राणा द्विसमुद्भवः ॥

## प्राकृत

जे ब्रह्मस्थान स्थिते आकाश त्यास स्थिरीमात्र आहे त्या-  
स ब्रह्मग्रंथि असे नाव त्यासध्ये प्राण हृदयस्त वायू राहतो.

## संस्कृत

॥वन्हिमारुनसंयोगान्नादः समुपजायते ॥

॥ननादेन विनागीतं ननादेन दिनास्त्ररः ॥३॥

## प्राकृतार्थशिक्षानुरोधी

आत्माबुद्धीने पदार्थ घेऊन मनाते प्रेरणा करितो मग म-  
ग शरीराचा उंत जो अमी त्यासी संबद्ध होते. तो अमी वा-  
त्यास प्रेरणा करितो तो वाराउंत संचार करितो अस्ता मंद्रस्म-  
णजे नाभिस्थानी स्वर उत्पन्न करितो नादावस्त्रून गीत नाही स्व-  
रही नाही. ॥स्त्ररः ॥

अ इ उ अ त्त ए ए ओ ओ  
अ पासून ओ पर्यंत जे ने स्वर जाणावे.

गायनप्रकाश  
प्रकर्ण २  
संस्कृत

॥ निरंतरः क्षमस्थानं हस्तदीर्घं पुतान्त्रयः ॥ २ का ॥  
॥ लेकु कुटु न तो दश्यं न दत्यु कालगीः ॥ ॥

प्राकृत-

पाहाटेस कोबडा कुचुर्कु असाशद करितोत्या शहावस्तुत पा-  
णिनी अष्टीनी प्रत्येक काही म्बरावर हस्त दीर्घं पुन अशा ती  
न संज्ञा केत्या ज्ञाहेत.

हस्त — अ इ उ अ त्व

हस्ताक्षराची येकमात्राजाणावी  
अ अ इ इ उ उ अ अ } यादीघीचादोनमात्राजाणाव्या  
संध्याक्षरे { अ इ अ उ अ ए अ ओ } याचाहीदोनमात्राजाणा-  
व्या-

अ अ अ

असे तीन अकार प्रमाणाने पुताचा तीनमात्रा जाणा  
व्या. व स्वक्षाहून पुढे अनुस्वार विसर्ग याची ही येकमा-  
त्रा जाणावी.

## प्रकर्ण २

### व्यंजनवर्ण

हृ य व र अ म र ण न झ भ ध द ध ख फ छ थ च द त क प  
य भ ष स

हृ पा सू न स पर्यंत वर्ण किंवा व्यंजन त्यांस संज्ञा जा व्यंजनास  
स्वर मिक्केल तें अक्षर व्यंजन सहित स्वर ही भांती न सावी.

वर्णोच्चारणकसेकरावेयाचीस्थाने.

अ क ख ग घ ङ . . . . . यांचे कंठस्थान जाणावे.

ट च छ ज झ ज य श . . . . . यांचे तालुस्थान जाणावे.

ऋ ट ठ ड ढ ण र ष . . . . . यांचे मूर्धास्थान जाणावे.

तृ तथ द ध न ल स . . . . . यांचे दंतस्थान जाणावे.

उ प फ ब भ म . . . . . यांचे औष्ठस्थान जाणावे.

० अ म ड ण न . . . . . यांचे नासिकास्थान जाणावे.

व . . . . . यांचे दंतोष्ठस्थान जाणावे.

ए ऐ . . . . . यांचे कंठ तालुस्थान जाणावे.

ओ औ . . . . . यांचे कंठोष्ठस्थान जाणावे.

ये थून गायनो पक्रम

# गायनप्रकाश संस्कृत

।।सामंवदात्स्वराजातास्वरेभ्योग्रामसंभवः॥  
।।ग्रामेभ्योजातयोजाताजातिभ्योरागसंभवः॥

## प्राकृत

सामवेदापासून म्वर उत्पन्नजाहले त्यामध्ये तीन पाम पामा-  
पासून अनेक जार्ती उत्पन्न ज्यात्या च जाति भेदे करून भेंरवा-  
दि राग इले.

## संस्कृतश्लोकाचा अनुगम

श्रीरामवेदात् न गायनाच्चा प्रकार के आह्मणुनी  
स्वर्गाच्चा ॥ जो आदिसामध्यमध्ये वटीनी नेयी स  
मानस्वरुपी तमार्ना ॥ ॥ ॥

## संस्कृत

॥८॥ समस्वरास्त्रयोग्रामामूर्छनाश्वेकविशं तिः ॥  
॥९॥ द्वाविंशतिश्वश्रुतयग्नतेभ्योरागसंभवः ॥ ॥

## अर्यावृत्ताने

## प्राकृतिका.

॥ स्वरमानग्रामत्रययेकविसनशाच्मूर्छनाहोर्ता ॥  
॥ बावीसश्चनिभेदेगगधैरागिण्याबहूघडनी ॥१॥

## प्रकर्ण २

### संस्कृत

॥ श्रुत्यनंतर भावीयः शद्वो नुरण नात्मकः ॥ स्वरारंजय निश्चो तु श्चिः ॥  
 ॥ तं सम्वरु उच्यते ॥ ५ ॥ प्रथम श्रवणा लङ्घः श्रूयने ह स्वमात्रकः ॥ ॥  
 ॥ सा श्रुतिः संपरिज्ञेया स्वरावयव लक्षणा ॥ ६ ॥ श्रुतिः श्चिः स्युः स्व ॥  
 ॥ राः पद्मर्षभगं धारमध्यमाः ॥ पंचमो धेव श्वाथ निषाद इति सम ॥  
 ॥ ने ॥ ने षां संज्ञाः सरिगमपधनीत्य परामताः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

### ॥ स रिगमपधनि ॥

#### टीका

स इत्यादि व्यंजना वाचून प्रथम ह स्व मात्रक स्मणजे लघु-  
 संज्ञक अ किं वा इ उ इत्यादि शह जो श्रुत होतो त्यास श्रुती अ-  
 शी संज्ञा त्या श्रुतीचा अनंतर उनुरण नात्मक ह्यणजे नादात्मक  
 जो ध्वनि तो यां शास्त्रांतील स्वर तो ही अकागदि रूपेकरूप  
 स्पष्ट होतो श्रुती ह्यणजे स्वर आहे अवयव जीचा ने स्वर प-  
 ङ्गादि नेदेकरूप सार्थ होतात पङ्गादि ही त्यांस संज्ञा तर अ-  
 अशा सज्जेकरूप स रिगमपधनी यांचे प्रहण  
 योधार्थ करावे स्वराहनीने जे जारागाचे असतील ते त्याचा  
 खिंजेवर जाणावे.

## गायनप्रकाश

प्रकर्ण ३

त्रयोग्रामाः . . . . . टीका  
 तीन ग्राम हा विविध भेद दृष्ट होतो. येक शास्त्रीय येक  
 लोकीक येक कल्पनिक तो क्रमाने

संस्कृत

॥षड्ग्रहयःस्तराःसप्तग्रामेयाच्चषड्ग्रहयमो॥

॥केविद्राधारमप्याहुःसतुनेहस्तिभूतले॥८॥

टीका

प्रस्तुत शास्त्रक्रमावरूप ग्रस्तुत देनच ग्राम प्रसिद्ध आहेत  
 नेहा तीन ग्राम बोलण्याचा प्रवाद आहे. असे वाटते परंतु ग्रा-  
 महणजे तीन टप्पे आदि मध्य अवसान सामनि याक्रमे  
 करून लोकिक तीन ग्राम हा भेद दृष्ट आहे.

| आदिग्राम | मध्यग्राम | अवसानग्राम |   |   |   |    |
|----------|-----------|------------|---|---|---|----|
| स        | रि        | ग          | म | प | ध | नि |
|          |           |            |   |   |   |    |

टीका

॥षड्ग्रहयमगांधारमध्यमपंचमहि धैवतनिषादा॥

॥सामनिहेग्रामअसतीगांधारग्रामसरजनीस्फरवदा॥९॥

## प्रकर्ण ३

### संस्कृत

॥षड्ग्रामोभवेदादौमध्यमग्रामएवच ॥गांधारग्रामइत्येतद्वामवय ॥  
॥मुदाहनं ॥१॥ यथाकुटुंबिनःसर्वेष्येकीभूताभवति हि ॥तथास्वरा ॥  
॥णांसंदौहोग्रामइत्यग्निधीयते ॥२॥ ॥

### टीका

षड्ग्राम मध्यम हे दोन ग्राम प्रसिद्ध आहेत परंतु सरिग मपध नि स्य अशा समुदायातील तीन ग्राम षड्ग्राम मध्यम येक एकुण तीन ग्राम कात्यनिक भैदाने आहेत ह्याणून स्वर लाव एव्याची पत्थती सरिग मपध नि सञ्जसी लोकात आहे. यावरून सप्तसूर तीन ग्राम अशी पदे झपदादिकांत वर्णन करितान सारांश सप्तसूर उत्तर षड्ग्राम वाचून लावणे हाच इत्यर्थ होय

## प्रकर्ण ४

### संस्कृत

॥क्रमात्स्वराणासप्तानामारोहश्वावरोत्पणं ॥मूर्छनेत्युच्यते ॥  
॥ग्रामस्थाएताःसप्तसप्तच ॥३॥ ग्रामवयेषिप्रत्येकंमूर्छनासप्तसप्तच ॥

## गायनप्रकाश टीका

क्रमेकरून सात स्वर चढविणे व उतरणे त्यास मूर्छना अ-  
शी संज्ञा प्रत्येक स्वरांत तीन तीन मूर्छना येकुण सात त्रिक ए-  
कविस समजण्याविषयी स्वराचे अंश करून अंश भागानी रा-  
ग आणि रागिण्या मिळू होतात.

सरिगमपधनि सरिगमपधनि सरिगमपधनि  
तानसमकाचा अन्वये करून एकविस मूर्छना म्हणजे येक  
भागानी चढविणे व उतरणे यास दृष्टांत जिन्याचा पायण्या  
उतर चढ होणे त्यास मूर्छना असी संज्ञा

### संस्कृत

॥चतुश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिः॥  
॥चतुश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिः॥ १२॥  
॥चतुश्रुतुश्रुतुश्रुतुश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिः॥ १३॥  
॥निषादगांधार्गेत्रिकृषभध्रेवतो॥ १४॥

### टीका अर्थ

षड्चतुश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुती आहे। मध्यम  
चतुश्रुती हांपंचम हिनसास्क पूर्ण हाराहो॥ १॥ त्रिश्रुतिधेवत

## मंकर्ण ४

होनो निषाद हो दिशुति कमानेया ॥ बाबी स शुति पावेन्युना धिक्ये स-  
राग होडदया ॥ १ ॥

### टीका

स्वराचा अवयव शुती किंवा शुतीचा अवयव स्वर ती शुती व्यंजना-  
वाचून अद्विति भेदे करून संख्या नियमाने बाबी स होतात.

### शुतीपाहाण्याचे कोष्टक

|                      |         |               |                  |         |         |         |
|----------------------|---------|---------------|------------------|---------|---------|---------|
| शु ४                 | कृषभ ३  | गांधार २      | मध्यम ४          | पञ्चम ४ | धैवत ३  | निषाद ३ |
| शुति ४               | शुति ३  | शुति २        | शुति ४           | शुति ४  | शुति ३  | शुति ३  |
| मूअअअअरि द्विद्वि    | गृउउउ   | मूअअअअपूजभम्भ | धूअभअनि द्विद्वि |         |         |         |
| मूर्छना              | मूर्छना | मूर्छना       | मूर्छना          | मूर्छना | मूर्छना | मूर्छना |
| स ४ अ३ रि३ अ३ गृ३ अ३ | पू४ अ३  | पू४ अ३        | पू४ अ३           | धृ३ अ३  | नि३ अ३  |         |
| स                    | रि      | ग             | म                | प       | ध       | नि      |

## गायनप्रकाश

### प्रकर्ण ५

प्रत्येक स्वरास तीन तीन मूर्छना येकुण सातत्रिक एकवीस तीन मूर्छना सूप्तासहित स्वराचे च्यार अंश कल्पित होतात. अथवा प्रत्येक स्वरास येक येक मूर्छना तीन सप्तके मिळून येकवीस मूर्छना हें येकमत्त आहे. स स्वराच्या च्यार श्रुती घेऊन कंपित धर्मवानूजो ती मूर्छना तिच्या समाप्तीस रि हा स्वर उदेग अशा कमाने सात स्वर लावावे.

### संस्कृत

॥षड्ब्रह्मकगांधारमध्यपंचमधेवताः॥

॥निषादश्वेत्यमीसप्रतंत्रीकंठोस्थिताःस्वराः॥

| नावे    | षड्ब्र | ऋभ | गांधार | मध्य | पंचम | धेवत | निषाद |
|---------|--------|----|--------|------|------|------|-------|
| अन्वर्थ | स      | रि | ग      | म    | प    | ध    | नि    |

षड्ब्रादिपदे करून सरित्यादिसंज्ञेकरून कांही उक्तरांचा सारखेपणासरि यामध्ये आहे. उटील पांच स्वर पूर्व अवयव ग म प ध नि असेच संज्ञार्थ योजिले स्मृतून अन्वर्थजाणावे.

### संस्कृत

॥षड्योजानःषड्जः॥

## प्रकर्ण ६

### टीका

साहा स्वरापासून उत्तम होतो त्यास पङ्कु असी संज्ञातो स वा-  
वहारिक शब्दावस्तु कुरेआहे. त्यास प्रमाण.

## प्रकर्ण ६

### संस्कृतश्लोक

॥षङ्कुवदेन्मयूरोहिक्षषभंचातकोवदेत्॥अजाविकोचगांधारंक्रैं-  
चोवदतिमध्यमं॥षुष्यसाधारणेकालेकोकिलःपंचमंवदेत्॥  
अश्वस्तुधेवतंरोति निषादंरौतिकुंजरः॥१५॥नसाकंठमुरस्तालु  
जिकादेनांश्चसंस्पृशन्॥षङ्कुयःसंजायतेयस्मात्स्मात्सङ्कुइतिस्मृतः॥१६॥

### टीका

जो गाणार त्याचा मुख्य स्वरापासून साहा टिकाणी स्पर्शक-  
रून झाला जो तो पङ्कु मयूर शब्दावस्तु वलखावा. जो गातो त्याच्या  
नाभीचे टिकाणी नाही होऊन स्पष्ट तर होतनाही त्योस लोकांत  
खरज असी संज्ञा त्या खर्जापासून साहा स्थानाला स्पर्शकरून  
जाह लातो मयूरी हस्त आहे. शास्त्रीय पङ्कु असी संज्ञा तर.

## गायनप्रकाश

निधिमगरिसा याउलट कमाने षड्पणा पूर्वस्या-  
ता जाणावा स्वर शाद्व सादृश्य आहे. स्पृष्ट रवरज  
आर्या

॥जाच्यान अधो भागी स्वरक्षुती रवरज होयतो ॥

॥साच ॥ पद्मस्थानाते स्यर्शुनि होतो जो शाद्व षड्पुहा साच ॥ १ ॥

## संस्कृत

॥ कृषभं चातकं दैवत् ॥ कृष्ण तिबृंहि वर्दश शादृश्यं करोति कृषभः ॥

## प्राकृतटीका

जैलाच्या स्वराप्रमाणें जा स्वराचे उच्चारण होतें तो किंवा-  
चानक म्हणजे लौकिकनाव पावळा पक्षी उसें स्पृणतात. तो  
बोलतो. कृषभ स्पृष्ट रि अक्षरयोजिलें.

## प्रकर्णि संस्कृत

॥ गांधारदेशे भवो गांधारः ॥ अजा विकी गांधारं ॥

## प्राकृत

॥ शोक्षी किंवा बोकडाचा जो शाद्व होतो तो गांधार जाणावा ॥

## प्रकर्णि संस्कृत

क्रौंचोददितिमध्यमं ॥ मध्येऽप्योमध्यमः ॥ तदूदेवोत्थितोचायुरुरः कं-  
ठसमाहतः ॥ नाभिंशामोमहानादो मध्यस्थेनचमध्यमः ॥ १७॥

## टीकाप्राकृत

तीन स्वराचा मध्ये होणार तो मध्यम किचा हृदय मध्याचे ठार्धी  
होणार ह्यषून मध्यम तो क्रौंच पक्षी बोलत जसतो. क्रौंच ह्याण-  
जे करकोना गंगातीरी प्रसिद्ध आहे.

## संस्कृत

॥ पुष्पसाधारणे काळे को किल पंचमं बदेन् ॥ पंचानां पूरणं पंचमः ॥  
॥ समुद्रतोमाहानाभेरुचेहृत्कंठमृधर्सु ॥ विरद्दंन्यं चमस्थानं प्रातः  
॥ पंचमउच्चते ॥ १८ ॥

## टीका

पुष्पे होण्याच्चा जो साधारण काल त्यावेळेस को किल प-  
क्षी जो बोलतो तो पंचम जाणावा. पुष्पाधिक्यकाळी पंचम अ-  
धीक उंशाने होत असेल ह्यषून साधारणे काळे असे वाक्य  
बोलले. नाभी अणिर्डर, हृदय, कंठ, मस्तक, या पांच निकाणी  
फिरुन होतो. ह्यषून पंचम पांच स्थानास पूर्ण कर्णार ह्यषून

## गायनप्रकाश

### संस्कृत

पंचमस्तुणवि.

॥ अश्वस्त्रधैवतं रोति धीमतामयधैवतः ॥ धीमतामयधैवतः ॥

### टीका

अश्वाचे जे हेषित तो धैवत धैवत लागणे व अनुभव होणे हे बुद्धि मंताचे काम आहे. ह्याणून धीमतामय धैवतः ॥

### संस्कृत

॥ निषादं रोति कुंजरः निषदतिमनो अस्मि निति निषादः ॥

### टीका

स्वरसमाप्ती विषयीं जे थे मन राहते तो निषाद तो हत्तीचाशद्वाजाणावा-

### उनार्या

कुदुमयूरवदनसे वृषभकृषभही अजाविगाधारा ॥ मध्यमक्रोंच-  
स्कको किल पंचमहो पुष्पकालिअवधारा ॥ ॥ ॥ धैवत अश्वहेषित  
कुंजरकरितो निषादशद्वानें ॥ हाभेदव्यवहारिकजाणावापरिस्कमान्यवे-  
दाते ॥ ॥

### टीका

हाऊपमाऊपमेय भेदस्त्वरावरजो दृष्ट आहे. तो व्यावहारिक बो-  
लण्यावरून जे शद्व होतात. त्याचा नकेतर धनिस्त्वप्यजो शद्व तो  
मयूरादिक बोलतात उस्पष्टवर्णात्मक असून धनिस्त्वप्यजो तो या

शास्त्रांतीलस्वर.

## प्रकर्णट संस्कृत

॥नाभिस्थानेभवेत् षड्गोनासिकायांतर्थर्षभः॥ गांधरभ्वकपोलेस्या-  
त्वद्ददयेमध्यमस्मृतः॥१॥ यीवायांपञ्चमोजातकपालेधैवतस्तथा॥  
तालुस्थानेनिषादश्वस्त्ररव्यूहप्रदर्शितः॥२॥

### टीका

हास्त्रपुरुषसप्तस्त्ररात्री अनुभविकउपतिस्थानेजाणावयाचाहाय.



|                                     |    |
|-------------------------------------|----|
| निषादनालुस्थानाचेगायींप्रत्यक्षहोतो | नि |
| धैवतकपालमध्याचेगायींहोतो            | ध  |
| रिषभनासिकास्थानाचेगायीहोतो          | रि |
| गांधारगल्लाचेगायींहोतो              | ग  |
| पञ्चमकंठस्थानाचेगायींहोतो           | प  |
| मध्यमहृदयाचेगायींहोतो               | म  |
| षड्जनाभिस्थानीचेगायींहोतो           | स  |

### टीका

॥नाभिस्थानीषद्गुप्रकटतसाकृष्महोतसेनाकीं॥ गांधारकपोलातुनि-  
होतोमध्यमहृदयअसेनाकीं॥१॥ पञ्चमकंठीधैवतकपालमध्यानहो-  
यहिनिषाध॥ तालुस्थानीहेस्त्ररषद्स्थानीमिळुनिषद्गुहासाध॥२॥

# गायनप्रकाश

## प्रकर्ण

### संस्कृत

॥ पंचमाद्यभोजातोगांधारी धैवतान्त्रा ॥ निर्वादा ॥

॥ नमध्यमः स्यात्यधनिजारिष्मासून्ताः ॥ २९ ॥ ॥

### टीका

॥ पंचमज कृषभहोतो नैसागांधार धैवताप्रस्तुती ॥ मध्यमनि श्रा  
द्यजतसारिगमोत्सत्तीसहुहोपधनी ॥ १ ॥

### प्राकृत

पंचमापासून कृषभहोतो हा उनुभववीणासतारादिवादा-  
चे, तायीं स्पष्ट होत आहे.

धैवतापासून गांधारहोतो

निरवादापासून मध्यभहोतो.

पूर्वस्वरमुख्यरूपाने आहे. तोच उनरोनर स्थानभेदाने  
उनन्यसहशा होतो.



प्रकर्ण १०  
संस्कृत

॥ उच्चैर्निषादगांधरीनीचैक्ष्मभपंचमी ॥ शेषा ॥  
॥ स्तुस्वरिताद्वयाषद्वृमध्यमधेवतः ॥ २२ ॥

|    |              |   |
|----|--------------|---|
| स  | स्वरीत       | पूर्विदात्तश्ववणहोर्डनपुदेऽनुदात्तश्ववणहोतो-      |
| रि | अनुदात्त     | ताल्वादिस्थानचेदार्थी अधोभागीं जास्वराचेत्त्वारतो |
| ग  | उदात्त       | ताल्वादिर्ध्वं भागाचेदार्थी उत्सन्नहोतो-          |
| मु | स्वरित       |   |
| प  | अनुदात्त     |   |
| ध  | स्वरितस्वरित | उदात्त  |
| नि | उदात्त       | अनुदात्त  |
|    | स            | म   |
|    | ध            | ग   |
|    | नि           | प   |
|    |              | रि  |

आर्या

त्रिस्वरितषद्वृमध्यमधेवतहिद्युदात्तगांधार ॥  
तेसानिषादपंचमक्ष्मभहिअनुदात्तदोनअवधार ॥ १ ॥

प्रकर्ण ११

संस्कृत

मूर्ढनावितयंत्यक्षक्ष्मभोजायतेततः ॥ गांधारोमूर्ढनाभेदंजनयं ॥

# गायनप्रकाश

॥नृपंचमस्तथा ॥२३॥ त्रिमूर्ढीतःपंचमःस्यात् धैवतश्चतथाविधः॥

॥निषादांशत्रयात्पङ्कमादित्येकविंशतिः॥२४॥ ॥ ॥

४४४ इति कृष्ण भादिकाच्ची धर्मानेघेउनिहोतोतोस्यष्टपद्मजाणावा-

पङ्क॥ क्रुषभादि दस्थाने स्पर्शनी होतो-  
नि वाद॥ धै वता चेतीन ऊंश धेर्डन होतो-  
धै वत॥ पंचमा चेतीन ऊंश धेर्डन होतो-

पंचम॥ मध्यमाचेतीन् अंशधेऽनहोतो।  
 मध्यमा गांधाराचे त्रू अंशधेऽनहोतो।  
 गांधार॥ ऋषभाचे त्रू अंशधेऽनहोतो।  
 ऋषभ॥ पृद्वाचात्रिमात्रकालधेऽनहोतो।  
 पृद्व॥ होयकनाभिस्थानमात्रस्पष्टकरितो।



जसाजिनाचढणेतशा

ନି

आर्या

ऋग्मानेयेकये

प्रसाद चंद्र  
द्वारा

४

४८

सोपानमार्गचढणेतेविस्वरचढवितात्रिमा॥

॥ अकसा ॥ तीमूर्छना त्रिसंरव्या किंवायेक चिपुंतपंथ ॥

॥ असा ॥ ११

प्रकर्ण १२  
संस्कृत

॥ भैरवः पञ्चमो नाटो मल्हारो डमालवः ॥ द्वाः ॥  
॥ रवश्चेति षड्गारागः प्रोच्यन्ते लोकविश्वताः ॥ ३ ॥

## प्राकृत

॥ भैरवादि साहारागाची नावें ॥

भैरव १ पञ्चम २ नाट ३ मल्हार ४ गोडमालव ५ देशाख ६

## संस्कृत

॥ वंगपाली गुणकारी मध्यमा दिवसंतकः ॥ धन्यश्री श्वर्ग वत्तैराग भैरवसं ॥  
॥ अथाः ॥ २६ ॥

## प्राकृत

॥ भैरवाचा आश्रये करूल राहनात तेकमाने ॥

वंगपाली १ गुणकारी २ मध्यमा दि ३ वसंत ४ धन्यश्री ५

## संस्कृत

॥ ललतो गुर्जरी देशी वराटी रामकृत्तथा ॥ मितारागा ॥

॥ र्णवेरागा पञ्चेते पञ्चमाअथाः ॥ २७ ॥ ॥ ॥

## प्राकृत

॥ पञ्चमान्व्या आश्रये करूल राहनात तेकमाने ॥

ललत १ गुर्जरी २ देशी ३ वराटी ४ रामकृत्त ५

## गायनप्रकाश

संस्कृत { नटनारायणः पूर्वगांधारः सागलस्तथा ॥ नृतः ॥  
केदारकर्नाटो पंचैतेनाटसंश्रयाः ॥ २८ ॥

### प्राकृत

॥ नाटरागाच्याआश्रयेकरूपराहताततेक्रमाने ॥  
नटनारायण १ गांधार २ सागल ३ केदार ४ कर्नाट ५

### संस्कृत

॥ मेघमत्कारिकामालकोशिकः प्रतिमजरी ॥  
॥ असावरीचपंचैतेरागमत्कारसंश्रयाः ॥ २९ ॥

### प्राकृत

॥ मत्काराचेआश्रयेराहतातते ॥  
मेघमत्कारिका १ मालकंस २ कोशिक ३ प्रतिमजरी ४ असावरी ५

### संस्कृत

॥ हिंदोलस्त्रिगुणाधालीगोडीकोलाहलस्तथा ॥  
॥ पंचैतेगोडनामानरागमाश्रित्यसंश्रिताः ॥ ३० ॥

### प्राकृत

॥ गोडमालबाच्याआश्रयेकरूपराहतातते ॥  
हिंदोल १ त्रिगुणा २ धाली ३ गोडी ४ कोलाहल ५

## प्रकर्ण १२

### संस्कृत

॥ भोपाली १ हरिपाल २ श्वका ३ मोदी ४ धोरणी ५ वेला ६ ॥  
॥ वली ७ चंच ८ पंच ९ नाट १० मल्हार ११ गोडमाल १२ देसारब १३ ॥

### प्राकृत

॥ देशारब रागाच्चा अनुमत्ताने राहतात ते ॥

भोपाली १ हरिपाल २ कमोदी ३ धोरणी ४ वेलावली ५

|                |              |                |                    |               |              |
|----------------|--------------|----------------|--------------------|---------------|--------------|
| मेरव १         | पंचम २       | नाट ३          | मल्हार ४           | गोडमाल ५      | देसारब ६     |
| वंगपा<br>ली ७  | ललूत<br>१    | नटनाराय<br>ण ९ | मिघमल्हा<br>रिका १ | हिंदोल १      | भोपाली<br>१  |
| गुणक<br>१      | गुर्जरी<br>३ | गांधार<br>२    | मालुकंस<br>२       | त्रिगुणा<br>२ | हरिपाल<br>२  |
| नध्यमा<br>दि ३ | देशी<br>३    | सागल<br>३      | कोशिक<br>३         | धाली<br>३     | कामोदि<br>३  |
| वसंत<br>८      | वराटी<br>४   | केदार<br>४     | प्रतिम<br>जरी ४    | कोलाहल<br>४   | धोरणी<br>४   |
| धन्यश्री<br>५  | रामकृत<br>९  | कर्नाट<br>५    | असावरी<br>५        | गोडी १        | वेलावली<br>५ |

## गायनप्रकाश प्रकर्ण १३

**संस्कृत** { ॥ अन्येच बहवो रागाजातादेश विशेषतः ॥  
॥ मारुप्रभतयोलोकेतेच भद्रे प्रिकास्मृताः ॥ ३२ ॥

### प्राकृत

अन्यही रागदेश भेदामुखे द्वाले अहेत ते कल्याण करणारहोन ॥  
मारुराग ॥ १ ॥

### संस्कृत

न रागाणान तालाना मंतः कुञ्चा पि विधते ॥ संतोषाय शिवास्यै ते गेया बुध  
जनेशदा ॥ न थान यंति केला संनग गान सरस्वती ॥ यथा न यंति रागात्ते न रं  
गायन को विदं ॥ ३२ ॥

### टीका

रागाचा व तालुका अंत नाही. परंतु शिवाच्या संतोषार्थ विद्वज्जना-  
नी गांवे हें गायन केले असतां कैलासा प्रतिजसे नेतें नसी गंगा  
आणि सरस्वति नेतनाही त.

### प्रकर्ण १४

### संस्कृत

कपितं भीत मुखृष्ट मव्यरु मनुना सिकं ॥ काकस्वरं शिरसि गतं तथा स्था-  
न विवर्जितं ॥ १ ॥ विस्वरं विरसं चैव विश्लिष्ट विषमाहं ॥ व्याकूलं ता-  
लही नं च गातु दोषा श्वतु देश ॥ २ ॥ इति गायन दोषः ॥

## प्रकर्ण १४

॥रागाचेच्चवदादोषतेकमने॥

## टीका

काप्र १ भीनभीन २ उच्चस्वरानेघर्षितकेले ३ अस्पष्ट ४ नाकान्त ५ काकस्वर ६ शिरामध्येमात्रस्वर ७ स्वरांचीजी डिकाणेंत्या डिकाणीस्वर रनलागणे ८ अपस्वर ९ विरस १० परस्परस्वरांसव अक्षरांसविक दून ११ स्वराक्षरविषम १२ आहतह्यणजेस्वराक्षरांसव अपदून १३ ता त्तविहिनबेलाल ॥ १४

## प्रकर्ण १५

## संस्कृत

सस्वरंसरसंचैवस्फरागंमधुराक्षरं ॥ सालंकारप्रमाणंचषड्डिधंगीतलक्षणं ॥ ३६ ॥ स्वरेणपदसंयुक्तंछंदसाच्चस्फसंयुतं ॥ स्फमात्रंचस्फतारंचस्फगीतंतेनभण्यते ॥ ३७ ॥ इतिस्फगीतलक्षणानि ॥

## प्राकृतटीका

सस्वरचतुर्दशदोषरहितनादात्मक ॥ १ ॥ शृंगारादिसहारसेकरूपयुक्तेस्फरस २ स्फरागह्यणजेरागादिशोधकरूपगणे ३ मधुराक्षर ४ सालंकारतानादिस्वरेकरूपरंजित ५ प्रमाणह्यणजेशास्त्रादिप्रमाणेकरूपगणे ॥ ६ ॥

## गायनप्रकाश

### प्रकर्ण १६

संस्कृत { ॥ स्फुरितं कं पितलीनं स्तिमिनां दो लितावपि ॥  
 { ॥ अहतं त्रिकभिन्नं च गमकं सप्तधास्तुतं ॥ ३३ ॥

टीका — स्फुरित । स्वरास स्फुरण कं पितलीन तस्त्रिमिन १ स्वरास गुस्तरूप करणे स्तिमिन ४ स्वरास स लोबट करणे आंदोलित ५ स्वरास त्याचरूपाने द्वोलादेणे अहत ६ अहत गुणजे आप दूनलावणे

### प्रकर्ण १७

#### उत्तर्या

॥ स्वरकं पितलीनतसे स्तिमिनां दो लितमुख स्फुरणरूपे ॥  
 ॥ अहत गुणवर्जितजे गमकगमे स्वरित सप्तकारोपे ॥ १ ॥

### प्रकर्ण १८

#### उत्तर्या

॥ स्वरविस्तृत करणे जो होती तीतानये कक्षा ॥  
 ॥ स्वरपौन रुक्तय होता होते अलाप पावतो स्फुरसा ॥ १ ॥

## प्रकर्ण१८

टीका— येक स्वर त्याच रूपाने विस्तृत ह्यणजे लावट करणे नी। तान स्वर उनः पुनः ग्राम भेदे करून लावणे तो आलाप

आर्या { आलाप अनंत हरी ऐशाशङ्क रूप आलापी ॥  
 { जे इतर शङ्क तं नूवा द्यानुकरण नयांत आरोपी ॥ १ ॥

टीका— अनन अशाच अनुकरणाने स्वराचा अरोह आणि वरो ह करणे थोमू नोमू हे शङ्क विनादि वाद्याचे जाणावे ॥ १ ॥

संस्कृत— स्वयंयोराजते नादः स स्वरः परिकीर्तिनः ॥ ३९

आर्या { शङ्क प्रथम श्रवणी श्रुत होतो ह स्व मात्र तीच श्रुती ॥  
 { तदनंतर नाद तमक जो शङ्क स्वर सुगायनी वर ती ॥ १ ॥

टीका— शङ्क होन प्रकाराचा आहे. एक वर्णात्मक एक ध्वनीरूप तो वर्णात्मक ह स्व मात्र ह्यणजे येक मात्रक अ इत्यादि श्रुत होतो ती श्रुती तिच्यापुढे ध्वनिरूप जो शङ्क तो स्वर आहे.

आर्या { केले स्वरांश चारन्यून अधिक लाविना चिको मल हो ॥  
 { तैसा तीब्र होतो या भेद जाणता कधीन मो हो ॥ १ ॥

टीका— क्रृषभास येक अंश अधीक लावला तर तीब्र होतो. दोन अंश दिल्हे असता अनितीब्र होतो. तसा क्रृषभातील येक अंश कमी केला तर कोमळ होतो. दोन अंश कमी केले असता अ-

## गायनप्रकाश

तिकोमल होतो. अशा तीव्र व कोमल भेदाने रागरागांतर होते. अति तीव्र व अति कोमल हा ही नेद आहे.

### प्रकर्ण १९

#### संस्कृत

लघुःशुद्धोगुरुर्क्तिभाष्यांच्चपुतोभवेत् ॥ द्रुतस्तु चिदुरुपस्यात् इति  
सर्वत्रनिश्चयः ॥ ४० ॥ एकमात्रोलघुःप्रोक्तोद्विमात्रश्चगुरुर्गीर्वत् ॥  
पुतस्त्रिमात्रिकोऽज्ञेयेद्वत्स्यादर्धमात्रकः ॥ ४१ ॥ लघुर्गोःपुतस्या  
पिभवेत्तालःपृथक् पृथक् ॥ निलितानामपितथाप्रस्तारस्तस्यकथ्यते ॥ ४२ ॥

आर्या

जोहस्वलोऽपुष्टेत्तेतीर्धीसितुरुभ्येवदती ॥  
लघुयेकमात्रकत्तसाद्विमात्रगुरुत्रिमात्रहोयपुती ॥ १ ॥  
व्यजनजेहिंसमुद्दृतहोमात्रार्धत्यासञ्जुगमहा ॥  
शद्रावर्जित्याशस्त्रांनहोयञ्जुगमहा ॥ २ ॥

### प्रकर्ण २०

## प्रकर्ण२०

आर्या

चोवीसमात्रिकेचाहोतअसेयेकतालबोलअसा॥  
 धीधीनाधीधीनाकन्तानाधीधीनानवनिनसा॥१॥  
 उभयकरेवाजविनाउजव्यानेतालसमनकालगती॥  
 धनितकरावीतालप्रथमाक्षरिपचमीनवावरती॥२॥  
 येक्कातालाचीगतीबाराअक्षरीमात्रा॥२४॥ पहिलेपाच

वे नववे यातीन अक्षरावर तालाचा ठेका पडतो ठोक्याचे अक्षर टाकून पुढील ठोक्याचे अक्षर येतें तो मध्ये साहा मात्रा पूर्णकरणारे असे तीन गुरु पडतात.

## येकतालप्रकार

| ताल    | ताल    |         |        | उनराहनी    |
|--------|--------|---------|--------|------------|
| धीधीना | धीधीना | कन्ताना | धीधीना | ताल<br>धि० |

यागतीत कन्ताना यातीन अक्षराच्चून दोनी हातानी कळजवा वी यामध्ये ताल कालहा भेदनाही॥ आर्या इतर तालाच्यांगती विषई आहे. विलद व हताल येक रूपानेच आहेत. परंतु दोलामध्ये फेर आहे. तो पुढे स्पष्ट होईल.॥

## गायनप्रकाश

## प्रकर्ण २३

आर्या { पोऽशमात्रकहोतोताधिंधिनाधिंधिनात्रिवट ॥  
 हाहीनवाक्षरीत्याचेतालाक्षरहोद्विपंचमतथाष्ट ॥ १ ॥  
 मात्राद्वयटाकुनियातालाक्षरमात्रिकात्रयगणुनिया ॥  
 होतेद्वितीयतेसेत्तीयकालांतपाच्चवर्णितया ॥ १ ॥

## टीका

त्रिवटगतीच्या मात्रा १६ अक्षर ९ तालाचेऽक्षरदुसरे ॥ पहिल्या  
 ठांक्याचे ॥ पाच्चवेऽक्षरदुसच्यागोक्याचे ॥ आठवेऽक्षरतिसच्याचे ॥  
 दोनमात्राटाकूनतालाचेदुसरे अक्षरप्रथमठोक्याचे ॥ त्याअक्षरपा  
 सूनतीनमात्राटाकून मध्यमठोक्याचे पाच्चवेऽक्षर ॥ त्याअक्षरपासू  
 नतीनमात्राटाकून तीसच्यागोक्याचे उठाटवेऽक्षर

|  |                   |  |
|--|-------------------|--|
| त्रिवटतालवाजवीतअसताधी<br>धी जितकीअक्षरेतितुकींडा<br>व्याहतनेवाजवी- | ताल               | ताना जितुकीअक्षरेतितु<br>कीउजव्याहतानेवाजवार्वा- |
| खुरदी तालाचा<br>नमात्रा गोका                                       | तालाचा<br>गोका    | तालाचागो<br>का                                   |
| ता धि न्धि ना  | धि न्धि ता        | धि न्धि ना                                       |
| मात्रा अनुदा<br>२ त  | अनुदात्त अनुदात्त | मात्रा ३   |

कालाच्यामात्रा ५ धिनायाशद्वाच्या ३ तायाच्या २ बाकीच्यामात्राअकरा  
दुसच्याअक्षरपासून टवेऽक्षरपर्द्यते गणाव्या

## प्रकर्ण २२

आर्या

जोयेकतालमुख्यप्रथिततयाचाचिभेदसर्वाख्ये ॥  
होत्यातभादितालप्रकारभवसानमध्यपूर्वदिसे ॥ १ ॥  
द्वाचिंशान्मात्रकहायेकात्मेसांआठभाधिकवरी ॥  
उपधिक्यानेभेदप्राप्तपरीकालतालसाम्यकरी ॥ २ ॥

### टीका

यागतीची अक्षरे वाजविष्ण्या विषयी प्रथमधी येक पुढे त्रकङ्गधा हीटाकून धीना त्रीतीन त्रुटे कङ्गधा हीटाकून धीना तीतीन त्रुटूना हाकाल त्यापैकी तितूना हीतीन अक्षरे उजव्याहतानेमात्र वाजवावी. पुढे येक त्रकङ्गधा - हीतीन टाकून धीना हीदोन पुढे मध्यमठोक्याच्याधीते थून आरंभ पूर्वी साररवाजाणावा.

### उनादितालप्रकार

| तालाचामध्यगेका | तालाचाशेवटगेका | कङ्गधापासूनतूना<br>येतकाल |
|----------------|----------------|---------------------------|
| धी             | त्रकङ्ग        | धाना                      |
| ती.            | त्रकङ्ग        | तूना                      |

कङ्गधा पासूनतूना याअक्षरापर्यंत काल यागतीचा आरंभ मध्य ठोक्यापासून आहे तालकालच्यामात्रासमाझाहेत ह्या थून ही जादितालाची समाझाहेत वक्तीसमात्रेचाहाजाणावा. ॥

## गायनप्रकाश

### प्रकर्ण २३

आदितालप्रकारसमनाल ॥ यातालाची गत वाजविण्याविषयीप्रकार ॥ धी धी ही दानचउक्षरेंउजव्याहतानेवाजवावी ॥ धी धीना ही निनीही अक्षरे उजव्याहतानेवाजवावी ॥ असी तीन अक्षरे तीन घट वाजद्वन उजव्याहतानेती तीना ही नीन अक्षरेंवाजवृन्येत ॥ उजव्यानेकालानीलतिन्ही हीं अक्षरें वाजवावी ॥ तात्यर्य तालकालाची गतीसेंधी अक्षरें उभयहस्तानेवाजविण्याच्या भैदाने बरोबर वाजवावींहेच मुरव्य आहे.

पूर्वधीङ्गत्वश्वरणसदशादीर्घाचेउच्चारणकरावेंपुढील धीदीर्घ श्रुतिनेचउच्चारण करावा असे तिहीत्रिकाचे धी धी सारखेजाणावे.

| तालाचागेका । | ताला०२   | ताला०३   | काल    |
|--------------|----------|----------|--------|
| धी धी ना     | धी धी ना | धी धी ना | तीनीना |

उजवाडावा उजवाडावा उजवाडावा उजवाडावा उजवाडावा उजवाडावा

वाराक्षरीसमगतीमाचाचीसतालकालावे ॥ आहेताम्यत्व लघुत्तिस मणेसेवदक्तिजीसहोसाचे ॥ ॥ समगतीचामाचाचीर्दासतालकालमध्यवर्तमाचादाहादाहासमान आहेत ह्याणून सम असेताव झांल ॥

## प्रकर्ण २४

समगतीचाच भेदहाताल मानदुप्ट इनाले. समेचा अर्धभाग ताल  
कालाळा पूर्ण करिनो. त्वयून यांस अत्था असेनाव प्रसिद्ध आहे.

तालाचाठोका २

तालाचागोका ३

तालाचाठोका २

॥ धी धी न्नाना धीन्ना ती ती न्नाना ॥ धी न्ना धी ० ॥  
॥ नाचा न्वो वीस अरंभ मध्यमठोक्या पासून जाणावा ॥ ॥

## प्रकर्ण २५

याच्याच भेदम कारे करून उनाहे लो

| ताल २    | ताल ३    | ताल १    | काल          |
|----------|----------|----------|--------------|
| धीधीन्ना | धीधीन्ना | धीधीन्ना | तीतीन्ना धी० |

यागतीचा दुसराही बोल उनाहे धिधिता धिधिता तिनि  
ना धिधिता धि० ॥

## प्रकर्ण २६

॥ दिपचंदी तालाची गतदाहा अक्षरी सो छामाचा ॥

## गायनप्रकाश

|         |      |     |             |       |
|---------|------|-----|-------------|-------|
| तालाचा२ | ताल३ | काल | तालाचाँडैका | पुनः२ |
|---------|------|-----|-------------|-------|

धिं धिन्नागे धिन् तितिन्नागे धिन् धिं० ॥ ॥ ॥

यागतीच्याप्रकारांतरेकरूप भेदहोतोतो.

|       |   |       |     |       |
|-------|---|-------|-----|-------|
| ठोका२ | २ | ठोका३ | काल | ठोका१ |
|-------|---|-------|-----|-------|

॥ धीै नाै गेतूनाै धिं धिन्नागेतूनाै धी० ॥ ॥ ॥

## प्रकर्ण२७

॥ धमारतालाची आठ अक्षरे च दोनच्यं जने मात्रादाहा ॥

काल तालाचा०

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ तधिन् धिन् धीै ततिन् तिन् ताै त० ॥ ॥

आडतालाचाै भेद त्रिताल

प्रथमठोका१ द्वितीयठोका२ तृतीयठोका३

तधिन् धिन् धीै ततिन् तिन् ताै त० ॥ ॥ ॥

## प्रकर्ण २८

बिलंदनाल येक्याचामेद परंतु बोडामध्ये फेर आहे.  
 धी धीनो वृकडूतूना केजानो तृकडूतूना धी० ॥ ॥  
 तालकाळाचा मेद नाही. प्रथम येका ताल लिहिला त्याच्या चौविस  
 मात्रा तश्च बिलंदगतीच्याही चौविस मात्रा

## चौताल

धुमकट तक ताधिन ताधिन ताधिन ताता कडूता कडूता धु-  
 मकट गदगिन तस्थिलांग धुमकट तक गदगिन तात्था धुमकट  
 तक ता० ॥ उकट तगतथेत धिला ताता गडू गडू तक धीधी  
 गडू गडू तक थोथो गडू गडू तक ना ना ना गडू गडू तक तकि  
 ट धिकिट धुमकट तक गदगिन तक तात्था धु० ॥ १ ॥ ॥

## प्रकर्ण २९

॥ भैरवमालकंस हिंडोल दीपक और श्रीराग ॥ मेघमल्हा ॥  
 ॥ रडतने बडेस बराग से कराग ॥ १ ॥ ॥ ॥

भैरव १ मालकंस २ हिंडोल २ दीपक ४ श्रीराग ५ मेघमल्हा ६

## गायनप्रकाश दोहोरा

॥ भैरवकीधुन भैरवीबैगालीबैरारी ॥ मधुमा ॥  
॥ धर्वीओरसिधुर्वीपाचोर्वीरहननारी ॥ १ ॥ भैरवी ॥  
भैरवी १ चंगाली २ चंगाली ३ मधुमाधवी ४ सिंधुवी ५

## प्रकर्ण ३० दोहोरा

॥ तोडीगोडीगुणकलीरवंवावतीकोकव ॥ माला ॥  
॥ कंसकीरागिनीगावतजानिदुर्लभ ॥ २ ॥ मालकंस ॥  
टोडी १ गोडी २ गुनकली ३ रवंवावती ४ कोकव ५

## प्रकर्ण ३१ दोहोरा

॥ रामकलीपटमंजरीओरकहेदेवदारव ॥ येना ॥  
॥ रीहिंडोलकीललितविलावलरारव ॥ ३ ॥ हिंडोल ॥  
रामकली १ पटमंजरी २ देवदारव ३ ललित ४ विलावलरारव ५

प्रकर्ण ३२

दोहोरा

॥ देखीनटओर कानडाके दारकंबोध॥ दीपककी॥

॥ व्यारी सवेमहाप्रेमपरमोहे॥ ४ ॥ ॥ ॥

नट । कानडा २ के दार ३ कंबोध ४ दीपक ५

प्रकर्ण ३३

दोहोरा

॥ धनासरी असावरी मारू बहुरी बसंत॥ थ्री॥

॥ रागकीरागिनी मालशिरी है अंत॥ ५ ॥ ॥

धनासरी । असावरी २ मारू ३ बहुरी ४ बसंत ५

प्रकर्ण ३४

दोहोरा

॥ भूपाली ओर रुजरी देसी कारमलार॥ तनक॥

॥ वियोगिनी कामिनी मेघरागकीरानी॥ ६ ॥

भूपाली । रुजरी २ देसी कार ३ मलार ४ तनक ५

## गायनप्रकाश

|          |               |            |        |                |        |
|----------|---------------|------------|--------|----------------|--------|
| भैरव     | मालकंस        | हिंडोल     | दीपक   | श्रीराग        | मेघराग |
| भैरवी    | तोडी          | रामकली     | नट     | धनासरी         | मूपाली |
| बंगाली   | गोडी          | पटसजरी     | केदारा | असावरी         | गुजरी  |
| बैरारी   | गुनकली        | देवसारब    | कानडा  | मारु           | देसकार |
| मधुमाधवी | रंवावती       | ललत        | कामोद  | बहुरी          | मल्लार |
| सिंधुवी  | कोकबि<br>लावल | बिलाव<br>ल |        | बसंतमा<br>लसरी | तनक    |

सामान्यवमुरव्यव्यवहारिकरागअनुक्रमाने

# प्रकर्ण ३५

## दिवसमान

|  |                                 |  |                                  |                                       |
|--|---------------------------------|--|----------------------------------|---------------------------------------|
| उपःकाढा<br>मेरव१   | दिवसउगव<br>व्यावरं<br>विभास१    | न्यारघटका<br>देवदारव२                                | प्रहरदिवसा<br>चेपुर्वी<br>गुजरी३ | प्रहरदिवसाचेपुर्वी<br>जोगी८<br>मेरवी७ |
| रमकली६   | गुनकली५                         | देसामियाचीतोडी२<br>डी१ चरारी१ लक्ष्मणलो१ गाधारीतोडी१ | जिवनपरीनो१                       | तोडी८ पिलु                            |
| प्रहरदिवसापर्यंत रागप्रतिघटकाच्या अंतरे गावे.                                      |                                 |  |                                  |                                       |
| असावरी   | देवगंधार                        | रवट  | सुवा                             | सुगरायी                               |
| बिलावल   | कोकब बिलावल                     |  | अलेया                            | यमनी बिलावल                           |
| सर्पदी   | प्रहरदिवसापासून दाहा घटकापर्यंत |  |                                  |                                       |
| सोरट   | बाराघटकादिवसपर्यंत              |  |                                  |                                       |
| हंदावनीसारंग   | मधुमाध सारंग                    |  | बटोससारंग                        |                                       |
| गोडसारंग   | दोनप्रहरापासून तीनप्रहरपर्यंत   |  |                                  | मियान्वा                              |
| चर्षाक्रूतूमध्ये अनियमगावा इतरक्रूतूमध्ये सं-<br>मल्हार ॥ गोडमल्हार ॥ दोनघटका दिवस |                                 |  |                                  | सूरमल्हार<br>नेघम                     |
| भीमपलास  | धनाश्री                         | लिलांबरी   | मधुमाधवी                         |                                       |
| सिंधुवी  | अहंग                            | तिसऱ्याप्रहरापासून दोनघटका                           |                                  |                                       |
| मारचा  | चारघटकादिवसमागील राहता          |  |                                  | संध्याकाळी<br>श्रीराग                 |
| मालश्री  | धबलाश्री                        | जयताश्री   | ललताश्री                         |                                       |
| पुर्वी   | गोरी                            | चारघटकामागील दिवसापासून संध्याकाळ<br>पर्यंत.         |                                  |                                       |

## गायनप्रकाश

## प्रकर्ण ३६

रात्रीमात्र

|              |              |              |         |
|--------------|--------------|--------------|---------|
| ग्रामकल्याण  | उरुद्धकल्याण | मोहनकल्याण   | झिंजुरी |
| यमनकल्याण    | हमीरकल्याण   | झूपकल्याण    | जंगला   |
| दृव्याकल्याण | जयतकल्याण    | कल्पोदकल्याण | काफी    |
| कल्याणी      |              |              | खामज    |
| नाट          | छाया         | छायानाट      |         |
| सावनीनाट     | कमोदनाट      | हमीरनाट      |         |
| केदारनाट     | नटनारायण     |              |         |

|              |             |            |
|--------------|-------------|------------|
| कान डा       | दरवारीकानडा | नायकीकानडा |
| कौशीककानडा   | मियाचाकानडा | गहराकानडा  |
| बागेसरीकानडा | साहाना      | अडाना      |
| केदारा       |             |            |
| बिहाग        | बोकरा       | बिहागडा    |
| मालकंस       | परज         | सोनी       |
| हिंडोल       | माठ         | बहोरी      |
| ललत          |             | बसेत       |
|              |             | यंचम       |

## प्रकर्ण ३६

|            |               |            |      |
|------------|---------------|------------|------|
| बहार       | वसंतान्चंबहार | केदारान्चा | बहार |
| कानाड्याचा | बहार          | बागेसरीचा  | बहार |

## प्रकर्ण ३७

॥ यो यं ध्वनि विद्वोष स्तु स्वर वर्ण वि भूषितः ॥ रं

ज को जन चित्तानो सरागः कथ्यते बुधः

टीका— जो ध्वनि विद्वोष ह्यणजे अनक्षरनादात्मक सप्तस्त्व रैकरून भूषित आणि चोसष्टवर्णात्मक जनाच्या चित्ताते संजन करणारंजो तो राग उपसे

भैरव आदि रागपत्रागिण्या हर्वत्मान जाहे.

## संस्कृत

॥ गंगा धरः शशि कला तिलक स्त्रिने ब्रसंर्पे ॥

॥ विभूषित तनु गज कृति वासाः ॥ भास स्त्रि ॥

॥ शूल करय एव लुड धारी इह न्यां बरोजयनि ॥

॥ भैरव आदि रागः ॥ १ ॥                    ॥                    ॥

## गायनप्रकाश.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथगैरवस्पवर्णनं ॥ उमरुचिश्वलधारीपन्नगहा ॥  
॥ रीसितोस्त्रसद्भसितः ॥ धृतदशिगंगोतिजटोजिनविकटोभैरवोसमद्य ॥  
कृ ॥ १ ॥

## टीका

॥ उमरुचिश्वलकरिधरिसर्पचाहारभस्मचर्चियेले ॥ शिरिशशिगंगा ॥  
तिजटा अनयमृगचर्मभैरवेधरिले ॥ १ ॥



भैरवराग  
संस्कृत.

धैवतां संग्रहव्यासो रिपहीनो थमातकः ॥ भैरवः सतु विज्ञेयो धैवता  
दिक्मूर्छनः ॥ १ ॥ क्रष्णः कोमलो यस्य धैवत श्वतथाविधः ॥ भवेदं  
श्रविभागेन पंचानामि हमेलनं ॥ २ ॥ भैरवः शिवरूपो यमादिरागः प्र  
कीर्तिनः ॥

दोहोरा

अंसन्यास सब धैवता दिहै होत ॥ धैवत मूर्छन भैरव भात तुदोत ॥ १ ॥

अर्थ

भैरवात्वा शुद्ध धैवता च्याअंशो करूप युक्त करावा ॥ क्रष्ण पंचम यादे  
न स्वरानी विहीन जाहाला आणि मध्यम स्वरांत गावा.

तात्पर्य

क्रष्ण भस्वर षुद्ध सदृश गावा येक मूर्छना विशिष्ट धैवत पेनला लूणजे  
पंचम स्वराचे जे चरम उच्चारण त्यापे क्षाय लिंचित् उच्चारण अधी  
क होते. लूणून रिपहीन व पंचम चरम गावा ॥

## गायनप्रकाश

अथमकोष्टकपूर्णस्तगच्छाणावं

स१

नि१ निशाव०

ध६ येवनश्रुतिः

हृदयप० पचमश्रुतिः

गाल० म६ मध्यमश्रुति

नाति० ग३ गोधारश्रुति०

नि२ कृष्णश्रुति०

स१ यदुश्रुतिः०

स२

येकमूर्ति० उनक०

प५ कृष्णव० ध६ प० ध४ प०

म६ कृष्णव० ध५ व०

म०

म३ म५०

कौमांग३

कौम० ल० ग३०

ग५०

स१ रि२

भेरवरागाचीस्तरावर्नकोष्टकात०  
जीआहेनीकृतात०

रि१०

रि१४

स०

परावाइ० मूलचक्रथापश्यन्तीना० भिसास्थिता० ॥ हृदिस्था

मध्यमाङ्गेया

शद्मुखानूनुत्तमहोतो० तीवाणीच्यारथकारची० परा१ पश्यती० म०  
 ध्यमा३ वेरवरी४ परामंज्ञकवाणी मूलचक्राचेतायीहोते० पृश्यन्तीनामक  
 नाभिस्थानीहोते० तद्दयाचितायी माध्यमाहोते० ब्रह्मयंथित्त० कंटदे

## मेरवराग

शाचेठायी होने ४

सरिगमपथ पमगरिगमगरिसनाधु ॥ निगनिधपमरिगमगरिस ॥ १ ॥

### क्रवपदनवीन

खरन ऋग्वेद ० . . . . . चोनान्त

प्रथमखरनस्त्राधिये गायिये वेवतसो आदि आदिरागममजप्र ॥

उंस-यासमवधेवनादिहेहोन वेवतपूरनमूरछन मेरवप्रात्नुदोनप्र ॥ १ ॥

### क्रपदाचाअर्थ

संस्कृत - खं आकाशं राती निगृष्ण हाती तिखरः नाभिः न समाज्जा

नः खरनः आकाशस्य परमेश्वर नाभित्वा तत्रैव राहोत्पत्याष्टुम्य

नाभिस्थानिकत्वात् न त्साधनत्वं तृव्यत्वः कार्यदत्यर्थः

प्राकृत - ख त्याजे आकाशं याप्रत्यहण कर्त्तजो नाभि त्या

पासून इग्नालाजो तां खरन ब्रह्मलिंग आणि परमेश्वराचानाभिजो तें-

आकाश न थेच शद्वृत्यन्होनं पद्महानाभिस्थानि होनं त्यागुनच

प्रथमखर आदेयत्वसाध्यकरावा.

### प्राचीनस्वरावर्त

मरिगमपथनी सप्तमूरमनग्ने २० अरोहि अवरोहि नान

न सवकोर्ये निधपमगरिस ॥ १ ॥

## मायनप्रकाश

संस्थृत— शिवमनिश्चर्चयं तीजपंकरोत्यन्तिस्तरवीभिर्या ॥  
 सा भैरवी प्रसुदिता ध्यानविलीनास्त्रो भते स्तवने ॥ १ ॥ स्फटिकर  
 चितपीठे रम्यके लास शृंगे विकचकमलपत्रे रचयंती महेशं ॥ करधृ  
 त जप मालापीत वर्णाय ताक्षी सुक विभिरियमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री ॥ २ ॥  
 प्राकृत आर्या— शिव पूजारतनित्यध्यान धरनि भैरवी स्तपनिच  
 रणा ॥ शिरणा धर्जि नासि अभयदेही जिचाही सरव्यासदाचरणा ॥ ३ ॥

भैरवी



## भैरवी

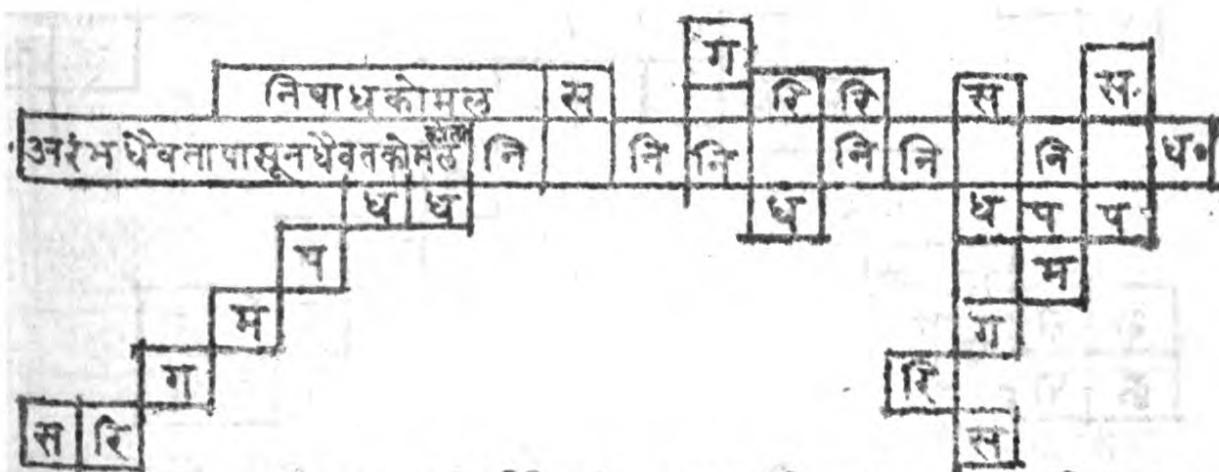
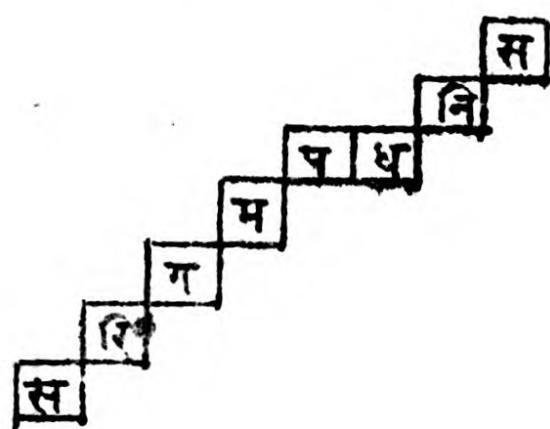
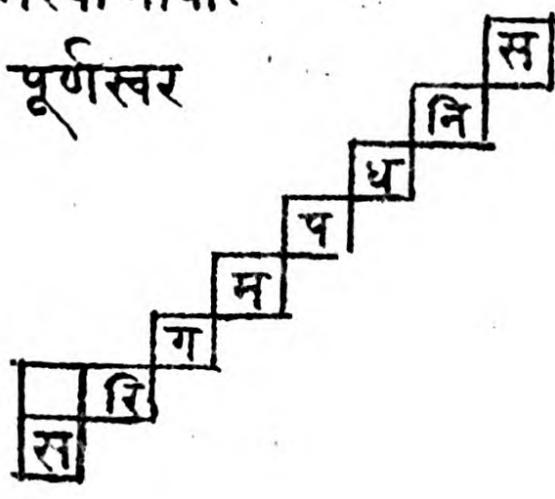
॥संस्कृत॥

संपूर्णभैरवाज्ञेयायहांसन्यासमध्यमा ॥ सौवेरीमूर्छनाज्ञेयामध्य  
मायामन्चारिणी ॥ १ ॥ केचिदेनां भैरवस्यस्वरेज्ञेयाविचक्षणे ॥

भैरवीरागिणीससानस्वरलागतात् यह उगाणिन्यास अंसस्व  
रमध्यमस्वरापासून अथवा धेवत वनिषादवक्षुषभ कोमलकरूप  
भैरवीगावी.

भैरवीची स्करावर्त

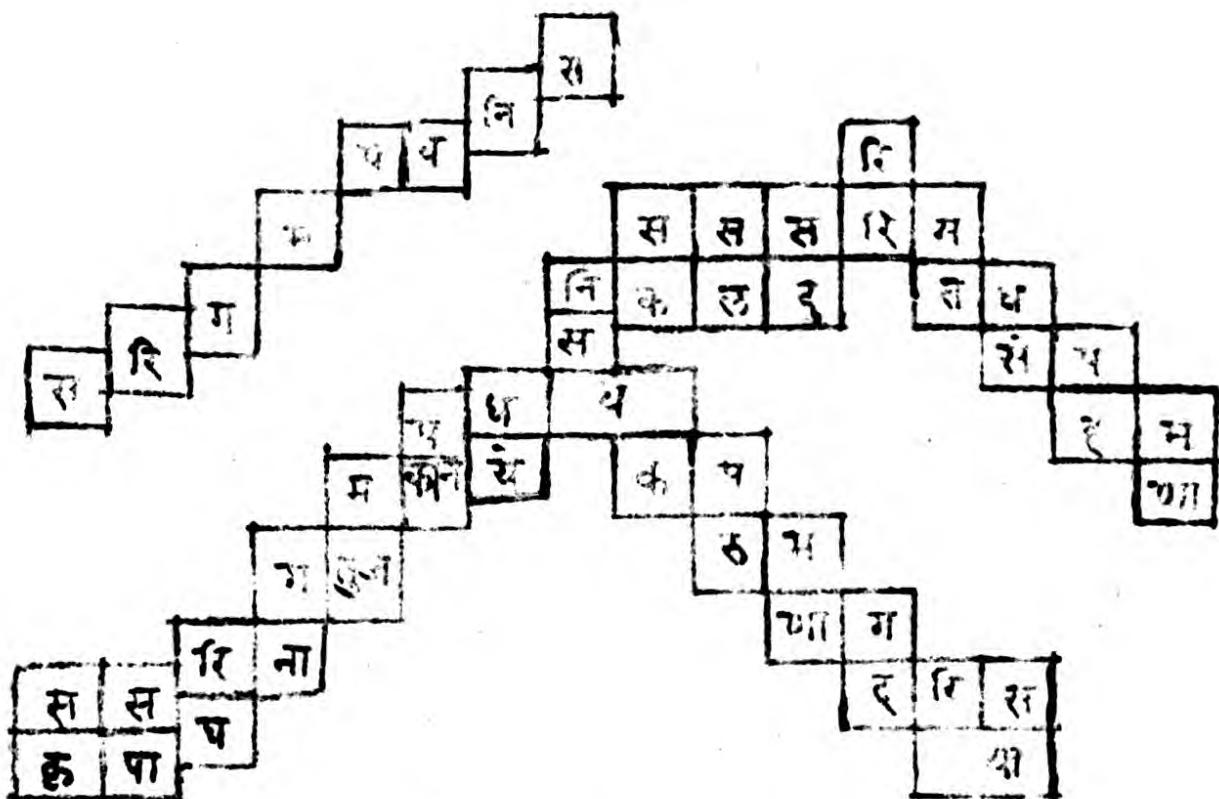
पूर्णस्वर



म, प, ध, नि, स, रि, ग, म, ही भैरवी एकमनीगातात् । प, नि, स, ग,  
म, ध, म, अशी ही कोंण्ही गातात् ।

## गायनप्रकाश

ही भेंरवी मध्यम घ्रहन्यासांश स्वरें कसून गावी. लोकिकांत न ही दांप्रकारची भैरवी गातात. न्यांनीनावे मिंद भैरवी, शुद्ध भैरवी, मध्यम घ्रहस्वराची भैरवी, शुद्ध. ० धेवतघ्रहस्वराची भैरवी दअसे.



कृपाधना तुजकानयेकरुणा सकलदुरिनसंहरणा कृपा० ॥

## बंगाली

संस्कृत—कक्षानिवेशितकरं डधरस्तपस्ती भासस्त्रिशूलपरिभंडिन  
नामहस्तः ॥ भस्मोङ्गलोनिविडहस्तजटाकलापां बंगाल इत्यभिहिनः स्त  
रुणार्कवर्णः ॥ १ ॥

राग हें विशेष्य आहे त्यापून सुलिंग वर्णन केले यस्तु नः नैरवस्त्री जाणावी.  
कक्षीं पात्र विशेषाधरनीहानी त्रिशूल वामकरी ॥ भस्मेज्जलिन तनुर्जा  
बंगालीर विसमाजटा हिधरी ॥ १ ॥



ओडवः पंचभीयुक्ताः स्वरैषद्विस्तुपादवः ॥ संपूर्णः सप्तभियुक्तएव रा  
गास्त्रिधामतः ॥ १ ॥

## गायनप्रकाश

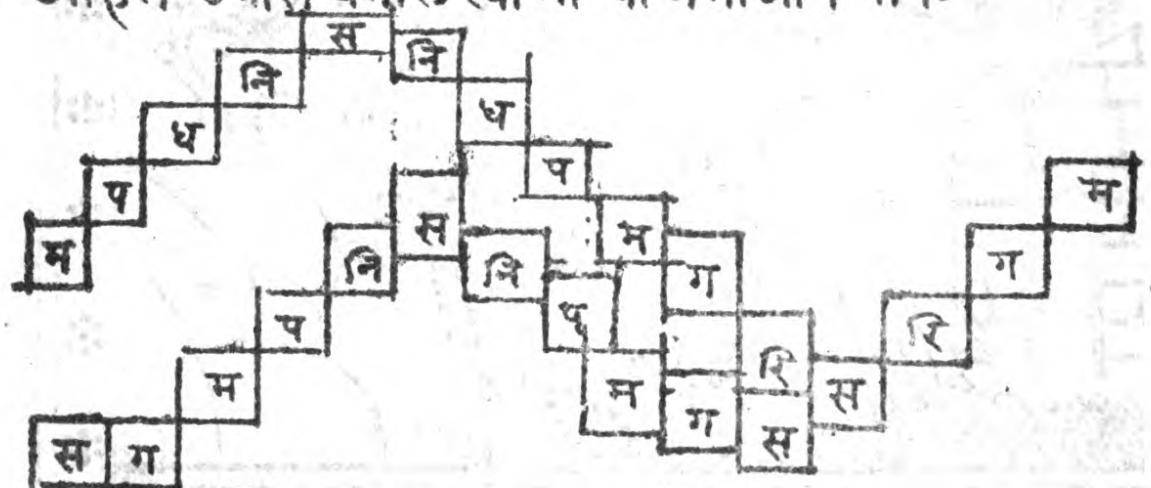
बंगालीओडवाज्जेयायृहांसन्यासपुङ्गभाक ॥ रिधीनाचविहेयामूर्छनाप्रथमामता ॥ पूर्णावामंत्रयोपेताकल्पिनाथेनभाषिता ॥

### बंगालीचेलक्षण

मध्यभांआणि धैवत हे दोन स्वर नाहीत दोन स्वरानी विहीनजोराम ओडव पाच स्वराचा

पूर्वग्रहस्वरपुङ्गप्रथममूर्छनाअंसस्वर दोनमूर्छनात्यागजाणावा. कोणाचेसत्तसंपूर्ण आहे. पंतु ग्रहन्यासासस्वरमध्यमात्रेजाणावे.

हे राग इकडे अप्रसिद्ध आहेत परंतु शारद्वावरूप लिहिले अहेत ज्यास येतील त्याणी याप्रमाणने गावे.



रवालचा कोष्टकात पंचस्वरात्मक ओड व वरीले कोष्टकात संपूर्णस्वराचा राग आहे. स, ग, म, प, नी, स १ म, प, ध, नी, स, र, गुम, इति बंगाली

## वैरारी

विनादयतीदयितसुकेशी सुकेशान्वामरचालनेत्रा ॥ कर्णदधानासुरवृक्ष  
मुख्यवरांगनेयंकथि वराटी ॥ १ ॥

## आर्या

पति सह विनोद करित्ये करिचामरधरुनिचलितनेत्राजी ॥ कर्णसुरपुष्टे  
धरिवैराटी भैरवासदाराजी ॥ २ ॥



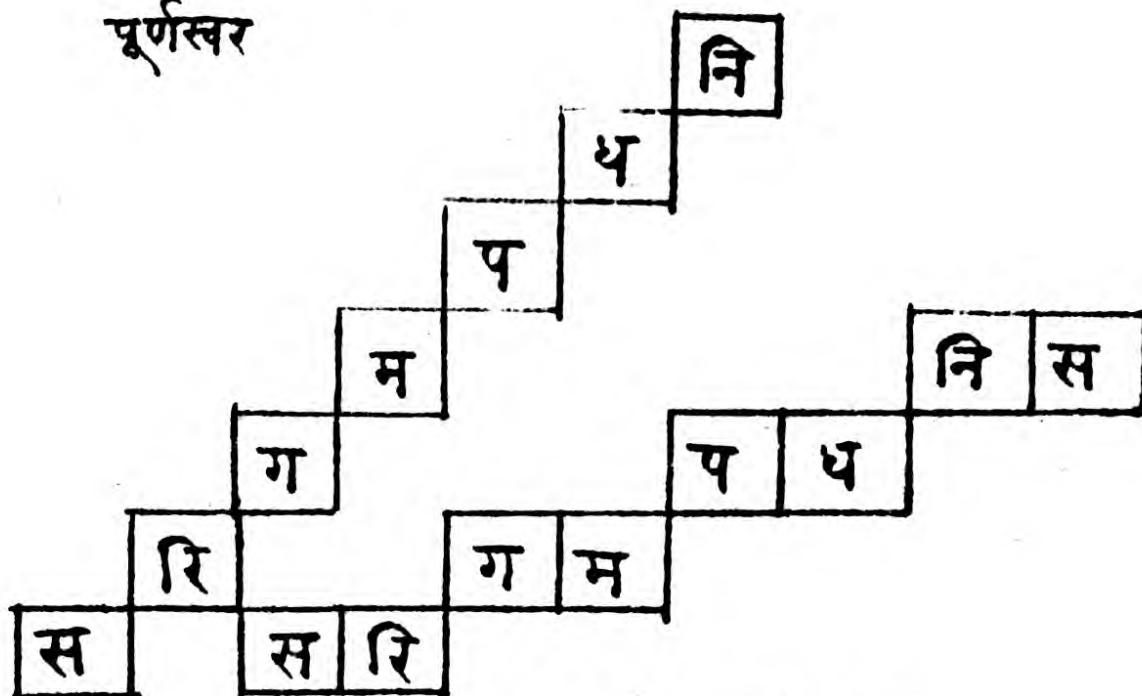
## गायनप्रकाश

षड्यग्निंशकन्यासावैराटीकथिताद्वधेः प्रथमामूर्त्तिनातस्यांसंपूर्णाकीर्ति  
वधिनी ॥१॥

उपर्युक्त

पूर्वग्रहस्वर षड्यग्निंशकन्यासावैराटीकथिताद्वधे त्याज्य स्वरही पूर्णपूर्वकि  
वा अपरस्वरज्ञाणावा.

पूर्णस्वर



स रि ग म प ध नि स  
हेराग दक्षिणदेशात् कचित् प्रसिद्ध अहेत. जाता याची  
चीज येत असेत त्याणे या स्वराप्रभाणे गावी. कोणी यारागास  
वैरारी तोडी असे ह्लणतात. हाराग संपूर्ण होय.



## मधुमाधवी

न्यैसहासंपरिभ्यकामंसचुविनायाकमलायताक्षी ॥ स्वर्णचिकुं  
कुमलिसदेहासामध्यमादिः कथिनामुनिंदेः

मधुमाधवीपतिसहआलिंगनकरुनिचुंवितीबदनी कुंकुमलिसतनूजी  
हेमामामध्यमादिबदतिमुनी

ही रागिणी नुरब्य परंतु विरहिणी नन्हे पनिसहित आहे.



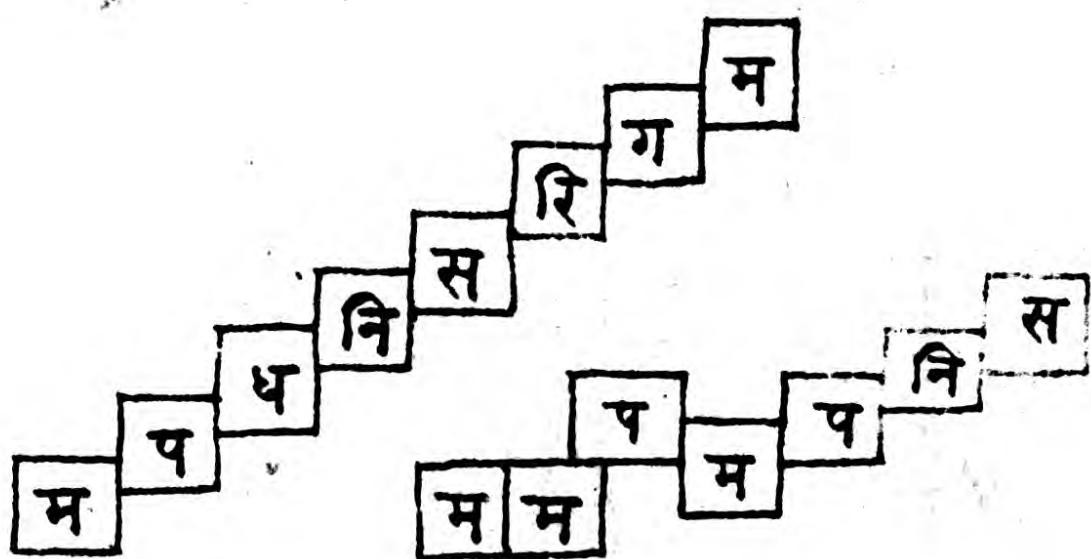
## गायनप्रकाश संस्कृत

मध्यमादिश्वरागांगत्यग्रहांसन्यासमध्यमा ॥  
संपूर्णाकथितात्म्हैरिधहीनाद्वचिन्मता ॥

### टीका

मधुमाधवीरागिणीचा मध्यमस्वरादिजारंभ प्रात्यस्वर उत्ताणि न्यास  
स्वर मध्यमच्चजाणावा.

कोणान्व्यामतीरिध यादोनस्त्रांनीहीन



मपधनिसरिगम

ममपमपनिस

## सिंधवी

उच्चतनुस्तनुरतनुजघनेशोणांशुकाविशूलांका॥

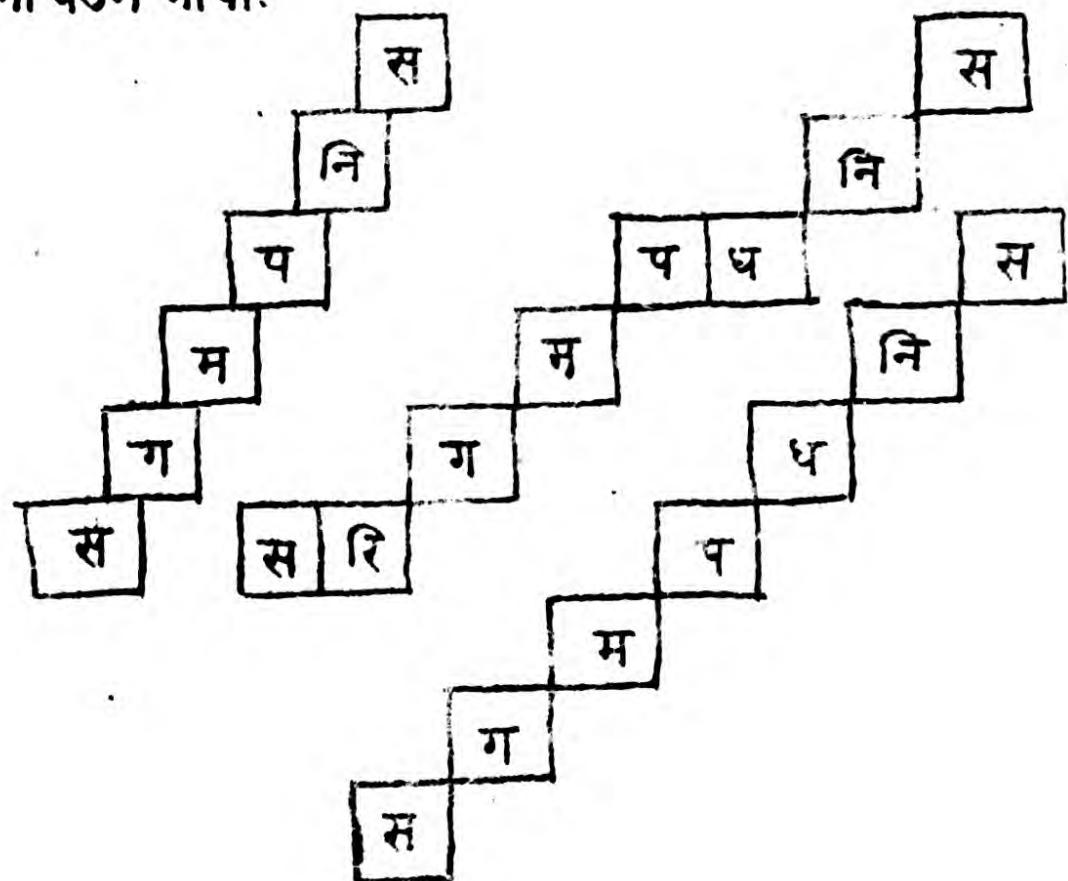
गोरीकरिगतिरभिमतयुथासेंधव्यतिकुधा॥ १॥

विशूलयाणि: शिवभक्तिरक्तारकांबंगधारितवधुजीवा प्रचंडकोपार  
सवीयुक्तासासेंधवीभैरवरागिणीयं ॥



पङ्क्षप्रहांसकन्यासासंपूर्णमेधवीमता मूर्छनोन्नरचनास्यात् केश्वित् पा  
उ निकामता ॥१॥ रिधिहीनाभवेन्नित्यं रसेवीरे प्रयुज्यते ॥

सिधुभैरवीचेतीनप्रकार आहेत. षाढव औढव संपूर्ण उन्नर पङ्क्ष  
ची मूर्छना घेऊन गावी.



स ग म प नि स



## मेघमल्हार

मेघरागपाचस्त्रियासहित.

भूपाठीओरगुजरीदेसीकारमल्हार  
तनकवियोगिनीकामिनीमेघरागकीरनी

मल्हाररूपवर्णनं

नीलोघनांतरालेलः लितःपीतांबरोविरः ॥ मृदुह  
सितोतिपिपासितन्यातपाष्वेषुमल्हारः ॥ ११ ॥

अनार्या

नीललङ्घविनिधिदघनीशोभेपीतांबरासिकसुनिकटी ॥

मल्हारमृदुसीयेतन्यातकतृष्णार्तजानकदी ॥ १२ ॥

# मेघमत्कार

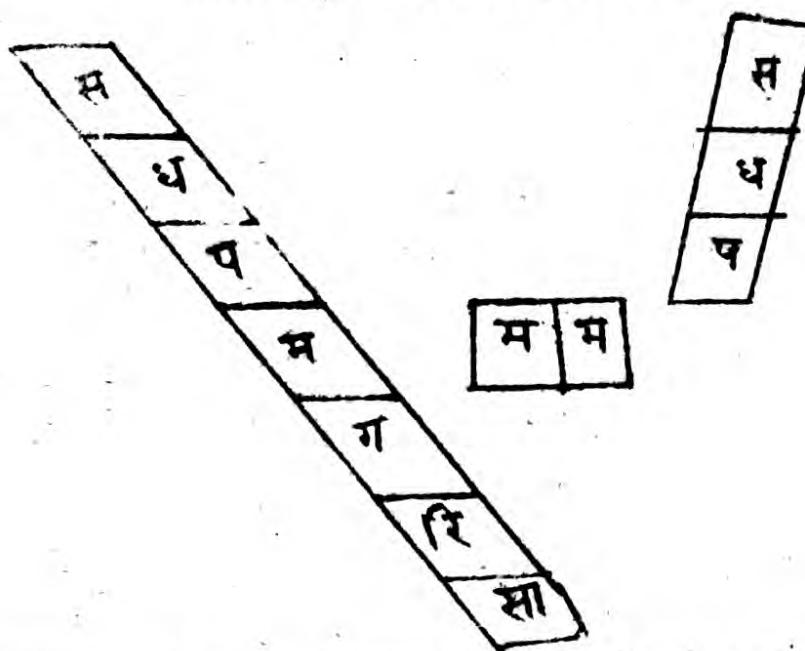


॥ मेघः पूर्णः सत्रयः स्यादुत्तरायतमूर्छनः ॥

॥ विहृतो धैवतो गेयः शृंगाररसपूरकः ॥

टीका. मेघराग तीनषु द्वितीय होत नाहीं संपूर्ण आहे धैवत प्रहन्यास स्वर जाणावा.

॥ मल्हारास निष्ठा धर्ज ॥ मध्यमापासून आरंभ ॥



|         |         |       |      |        |        |    |
|---------|---------|-------|------|--------|--------|----|
| मभग     | मप      | मगरि  | मगमप | धपमग   | मपमगरि |    |
| सारिरि  | सारिसाम | मपधसा |      | धपमगरि |        | सा |
| रिरिसाम |         |       |      |        |        |    |

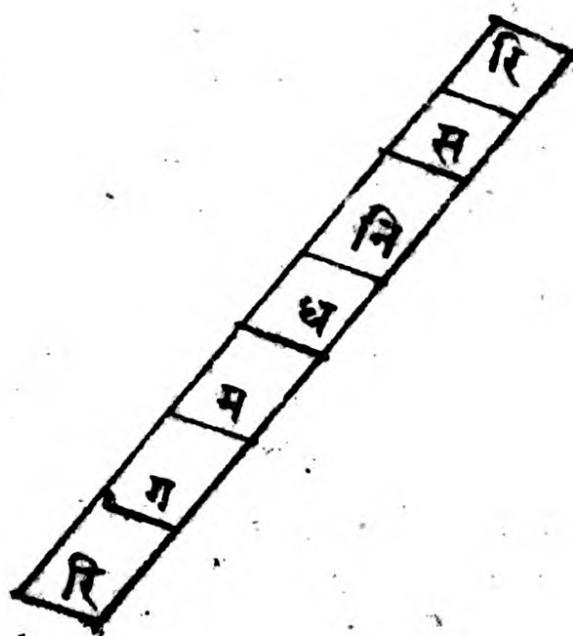
॥ आयोरिपावसजलसाजगाजमदनयनरीसप्रबलजातपितमये कलीनबकुंजसदनआपवनबादगजबादरभतवारकारभारआवतउरपावतपदपंठरदनआयो ॥

धनिसरिगमपध

॥ श्लोक ॥ निदावशं साकपदेन कांतं विवो धयं तीसुरतो त्सु  
केव ॥ गौरीमनो ज्ञाशुक पुच्छवस्त्रारव्याताम्बदेशीपरिपूर्णचित्ता ॥  
॥ आर्या ॥ पति निदितपाहूनिजागृतकरिसुरतउत्सुकागौरा  
॥ हरितवसनपरिधानादेशीजीरगिणीत्सुरवदारा ॥ १ ॥



श्लोक ॥ देशी पञ्चम हीना स्थान् क्रष्ण भवय संसुन्ता ॥ कलो  
पलति काङ्गे या मूर्छा ना विहृत र्षभा ॥ १ ॥  
टीका ॥ देशी राग पञ्चम स्थान विहीन तीन क्रष्ण भाने सुन्त गावी  
कलो पलति का संज्ञा क मूर्छा ना क्रष्ण भ को मल जाणा वा ॥



रिगमधनि सरि ॥

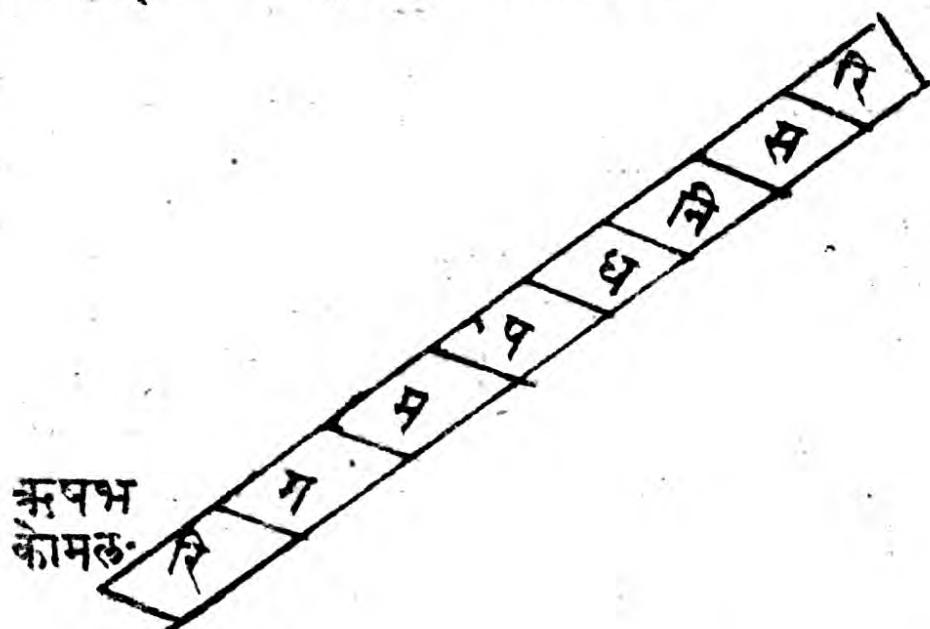
गुजरी शामल कांति स के श्री मलयत सूर्य हवांत शयन करी ॥ श्रु  
ति वरि वीणा हे वी दक्षिण दे श्री यसगिणी गुजरी ॥ १ ॥

॥ श्यामा स के श्री मलय दुमाणां मृदूल्ल स त्पहवत त्यमध्ये ॥ श्रुतौ  
स्वराणां दधतीति भागंतं श्री मुखा दक्षिण गुर्जरीयं ॥ १ ॥



॥ श्लोक ॥ ग्रहांसन्यासक्षभासंपूर्णागुर्जरीमता ॥ सप्तमा  
मूर्छनातस्यां बङ्गल्यासहमिश्रिता ॥ १ ॥

॥ टीका ॥ ग्रहस्वर आणि न्यासस्वर क्षभमूर्छनासात वी बङ्ग  
री रागमिश्रितकरून गावी प्रहर दिवसाचे आंत.



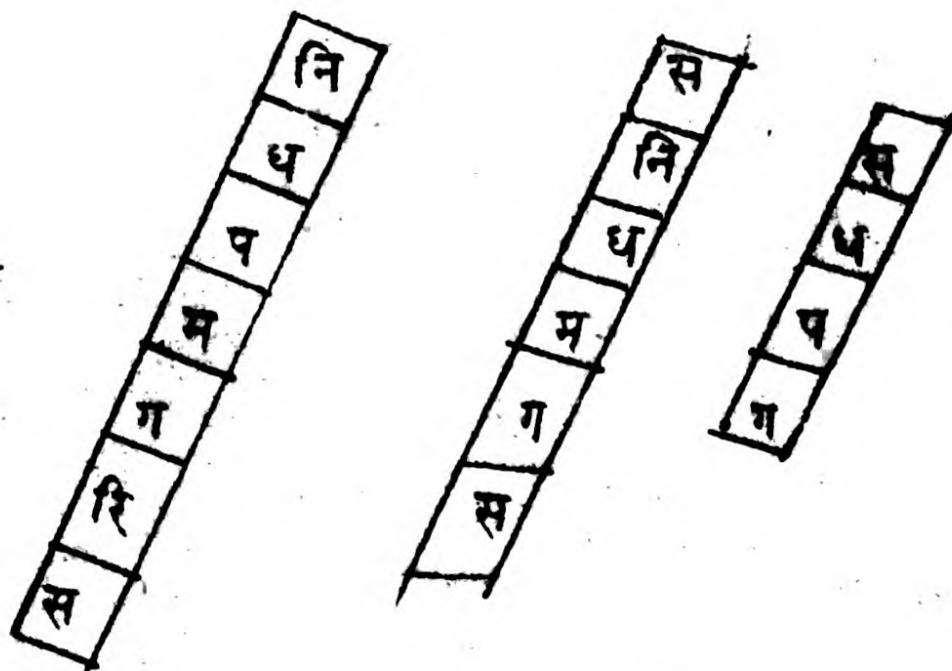
रिंगमपधनिसरि

बीभास- दोलालोला विपिने तरलित वलयं विभूष्य भूपाली॥  
 कांते प्रसिता त्यंतं कुंकुम पी तास्मरा द्वीता॥ १॥  
 गोरद्युतिः कुंकुम लिप्त देहा तुंगस्तनीचं द्रमुखीमनोज्ञा॥ भर्तुः स  
 मीपं विरहेण दीना भूपालि कांति रसेय मुक्ता॥ १॥



॥ पञ्ज यहां सक न्यासा भूयाली कथिता बुधेः ॥  
 ॥ मूर्ख ना कथिता यत्र सं पूर्ण शांति के रसे ॥ के  
 चित्रु मनि ही नेयं औड वापरि कीर्तिता ॥ रिप ही  
 ने त्यपि के चित्र ॥

टीका. पञ्ज यह स्वर आणि मूर्ख ना सं पूर्ण शांति रसा चे गायीं गावी.



हीरा गिणी सूर्योदय प्रभा समयीं गावी.

सरिगम पधनि सा सगमधनि ध ग पध सरिग.

## मल्हारः

आर्या॥ गोरक्षशापिक कंडा गायन क रुनी पतिस्मरण क  
रित्ये॥ वीणा धरनि करी वनि मलिना मल्हारि कारडत  
फिरत्ये॥ १॥

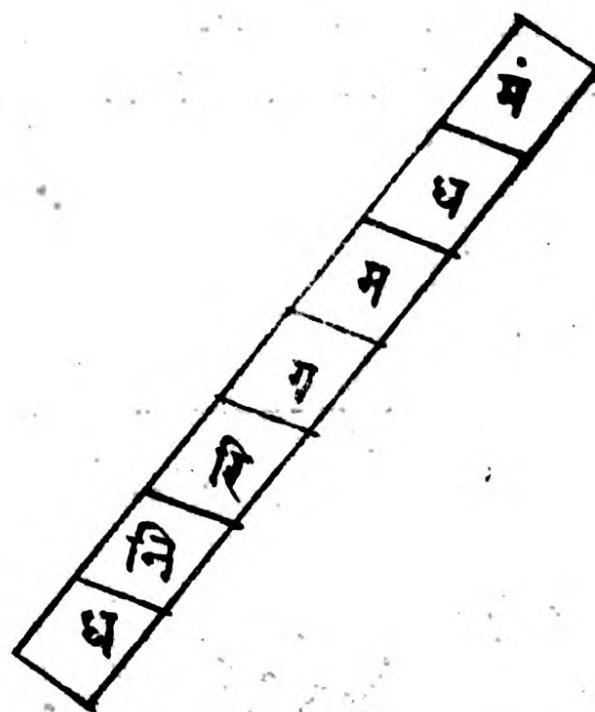
न्लोक॥ गोरी कृष्ण को किल कंडा दागी तरु लेना त्य पतिस्मरण  
आहाय वीणां मलिना रुदंति मल्हारि का यो वन दून चिन्ना॥ १॥



गायनप्रकाश  
॥ महारिसर्पहीनास्यात्यगृहांसन्यासधैवता॥  
॥ पौरबीमूर्खनाङ्गावर्षास्त्रस्त्रवदासदा॥

दीका.

॥ पूर्वषड्ज आणिपंचमयेण करूनहीन ग्रहांसन्यासधैवत  
स्वरजाणावा पौरबीसंज्ञक मूर्खनावर्षाकाळाचे दायी सर्व  
काळगावीस्त्रव प्रदहोत्यमहारस्यामगातात मेघमल्हा  
रप्रायः अप्रसित्य जाणावा.



धनिरिगमधम

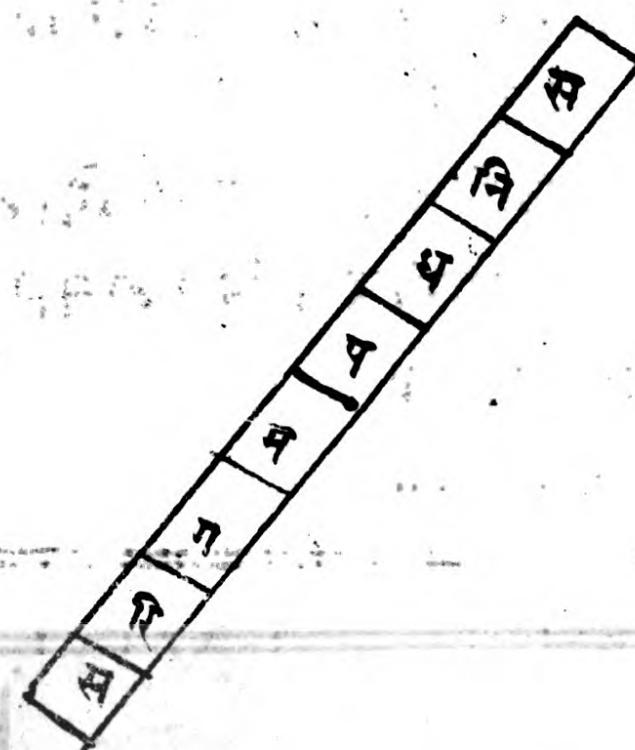
## तनकः

॥ कमलहलाच्याशयनीनिद्राकरीपतिवियुक्त  
विरहाने ॥ तनकारंकपतिजिचाभाषणक  
रिसांत्वपूर्वप्रेमाने ॥ ॥

॥ शश्यासुरस्त्रानलिनीहलानांवियोगिनींवीक्ष्य  
विषण्णचित्तः ॥ सुवर्णवर्णागृहमागतःसन्तसं  
भाषतेयांकिलटंकसंज्ञः ॥ १ ॥



॥ टं कास्यानुविधाष्टुसंपूर्णस्यापिमूर्द्धना॥



सरिगमपधनिस.

श्रीरागपांचभार्यासहितत्याच्चतसविरा॥

श्रीराग.

॥ धनासरीआसावरीमारुवङ्गरीबसंत॥

॥ श्रीरकीरागिनीगावतअतिदुर्लभ॥ १॥

॥ अशादशब्दःस्मरन्नारुमूर्तिः॥ महोह्नसत्यलुब्धकर्णपूरु॥  
घङ्गादिसेव्यारुणवस्त्रधारी॥ श्रीरागराजःस्तिपालमूर्तिः॥

अथश्रीरागरूपवर्णनं

॥ कनकानपत्रमूले लोलदुक्कलेगजाश्रयोराजन् ॥

॥ श्रीरागेस्विलभोगीनीरजराजिंभजन्मोहै ॥ १ ॥

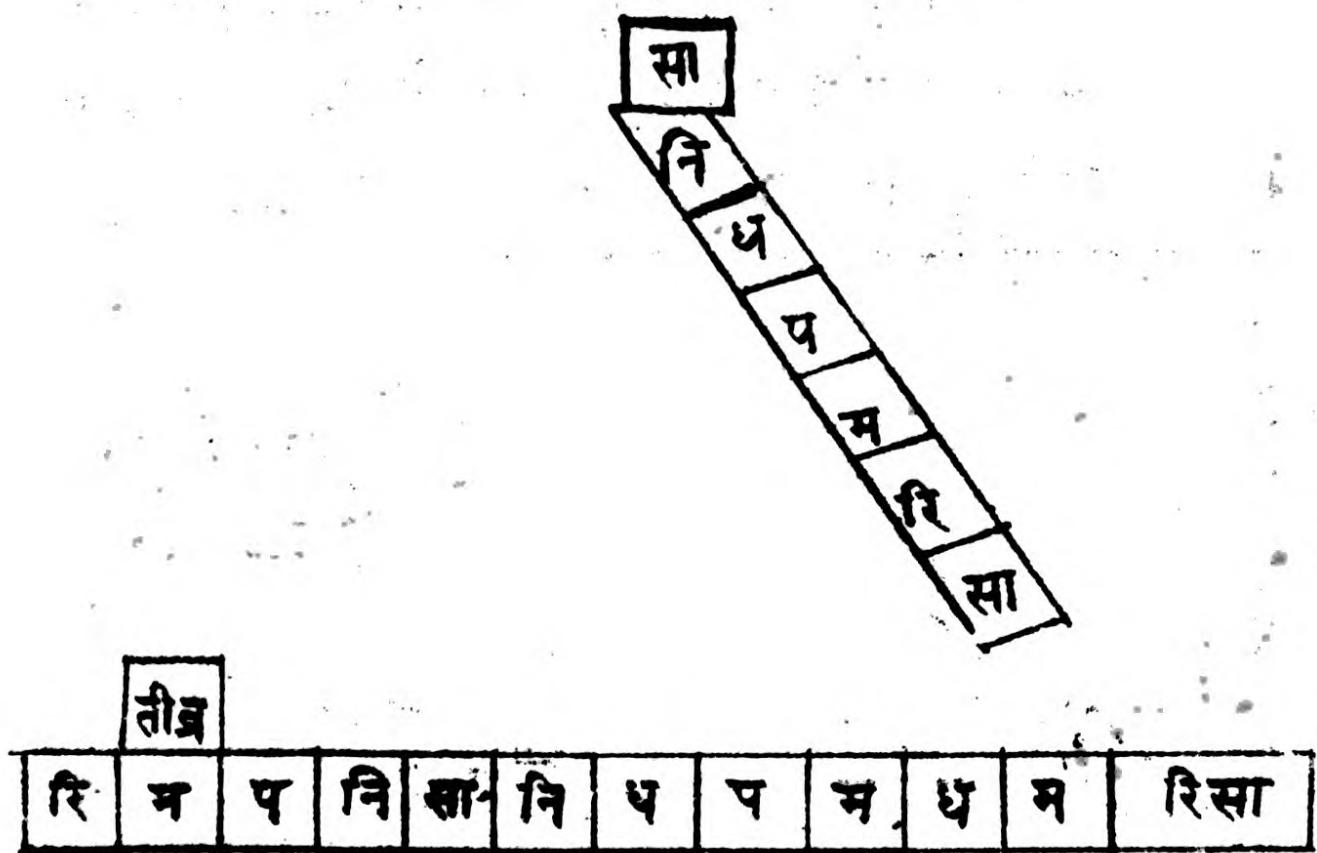
आर्या

॥ कनकानपत्रशोभेश्विरितैसीकमलमालवेदि  
यत्पी ॥ श्रीराग अस्विलभोगी वसनिगजावरि  
स्तकांसिसाधियत्पी ॥ ६ ॥

॥ श्रीराग ॥



॥ श्रीरागोयोहि विरव्यातः स ब्रयेण विभूषितः ॥  
 ॥ पूर्णः सर्वगुणोपेते मूर्छना प्रथमामता ॥ केचि  
 तु कथयं त्येन ऋषभत्रय संभवतं ॥



सरिगमपधनि सरिगमपधनि सरि.

॥अथधनाश्रीरागिणीरूपवर्णनं ॥

॥दुर्वीभविभाविरहासहालिखंतीपटेपतिरुदती॥  
॥स्मपितकुचासितगद्धास्थिरधमिद्धाधनाश्री  
स्यात् ॥ १ ॥ आर्यौ ॥ दुर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा  
कंतंलिखंतीविरहेणदूना ॥ श्वेतेकपोलेनयना  
श्रुविंदुनिष्पंदिनीधौतकुचाधनाश्रीः ॥ १ ॥



॥ सत्रयाहीन क्रष्णभाषाडवासाधनासरी ॥

॥ मूर्छनाप्रथमगेयारसेवीरेप्रयुज्यते॥७॥

॥ आदिषड्जापासून अषभद्यकून मध्ययेकषड्जघेऊन तृ  
नीयषड्जपर्यंत धनासरीचा विश्राम कोणीधैवताकाचून  
गातात आरोह धैवतवर्ज अवरोह मात्र धैवतयुक्तयेतात.

੩  
੮

ध ध

प प

# प्रमाण

三

四

४

३

## निषाधकेमल नि

4

四

માણિક્ય માન

३७

3

## संग्रह पर्याप्ति संक्षेप.

॥ आसावरी रूपवर्णन ॥

॥ चलकंदली दलमौलि मैलयाचल गाकल हण  
खरणा ॥ आसावरी सकरुणा बही हिशालि नी  
ली ना ॥ १ ॥ श्रीखंड शैल शिरवे शिरिव पुच्छ  
वस्त्रा मातंग मौक्तिक हतो द्यमहार वह्निः ॥ आ  
हृष्णचंदनतरो हतरं वहंति आसावरी सवल  
योज्वल नील कांतिः ॥ २ ॥



॥आसावरीगरित्यक्ताध्यहांशाचौडवा॥नमस्तुधै  
वतागेयोकरुणारसनिर्भरा॥भयहांशापंचमेनही  
नावाषाडवामता॥ककुभायाविनिष्पन्नावदंतीति  
मनीषिणः॥

प्राकृत.

॥आसावरी रागिणी ऋषभ आणिगांधारें करून विहीन  
धैवतगृहन्यासांस स्वरजाणावायेणे करून औडवाजाणा  
वी कोणाच्यामतें मध्यमयहांशपंचमावाचूनषाडवजाणावी.

प ध प  
 म म  
 स नि स नि ध  
 ध  
 ग  
 रि  
 स नि  
 ध  
 म.

धनिसमपथ मधनिसरिगध

मानवी

॥ इदुमुखीकनकाभादीर्घालंबालकानुलाभ  
लहृका। अरुणांवरानृपवरानृत्वरयंतीमारे  
वीसमिते॥ १॥



॥ अथव संतराग रूपवर्णनं ॥ के त्राग किं शुक एषः प्रवेश्वा  
 ता मां कुरु पिकस्य मुरवे ॥ अरुष व सन व संतो गोरस्क वे  
 शोर सालगतः ॥ १ ॥ शिरं डबर्हौ च्चय बत्यं चूडः कर्ण  
 वतं साहृत शोभिता मन्त्रः ॥ इं ही वर श्याम तनु विलासी  
 व संतकस्यादलिमं जुल श्रीः ॥ १ ॥

वसंतराग.



॥ वसंतकः स्यात्संपूर्णसंब्रयः कथितो बुधैः ॥

॥ श्रीरागमूर्ढनावाच्चे यारागविशारदैः ॥ १ ॥

॥ वसंतरागाचे स्वर संपूर्ण श्रीरागाची मूर्ढनावसंतासध्यावी-

स  
नि  
ध  
प  
म  
ग  
रि  
स

सरिगगमपधनिस.

॥ रक्तोत्त्वलंहस्ततलेनियुक्तंविभावयंतीतनुदेहव  
द्विः॥ रसालहक्षस्यतलेनिषण्णाशोकाश्रितासा  
किलमालवश्रीः॥ ॥



कल्याणरागस्तुपवर्णनं ॥

॥ सहत्रचामरेष्ठस्तां बूलीभौलिरलमालवान् ॥ कल्याणः  
सितवासाराजासिंक्षासनासीनः १ ॥ आर्या ॥ चामरहत्रसु  
शोभेतांबूलं करीमुकुदि मालरलाची ॥ सिंक्षासनीसदारस्थि  
तगतिकल्याणहेययलाची ॥ १ ॥



म  
नि

ध

प तीव्र

म

ग कोमल

रि

स

निनि सारिम गमप धपमगरि निठा। याचामुकाम अष्ट  
 भावर गमप धनिसानि धपमगम धपगरि सानिनिसारिनि

नाटरागस्त्वपवर्णनं

॥ खेटककृपाणपाणिः प्रतर्जीयन् वैरिणोरणेस्मद्दक्षः ॥  
 ॥ हरितालाभोहारीहयचारीधीरधीर्नाटः ॥ १ ॥  
 ॥ तुरंगमेस्कं धनिषिन्कबाहुस्वर्णप्रभः शोणितशोणगात्रः ॥  
 ॥ संग्रामभूमौ विचरन्तापीनदोयमुक्तश्वतुरंगमूर्तिः ॥ ॥

रागनाटकः



॥गायनप्रकाश॥

॥ गृहांसन्यासषड्जःस्यात्संपूर्णनिकामता॥

॥ प्रथमामूर्धनाज्ञेयागमकर्बडुधामता॥

॥ प्रारूपता॥

॥ अंसन्यास आणिघ्रहषड्ज स्वरापासून जाणावा सप्तरा  
चान्दराग होय.

स  
न  
ध  
प  
म  
ग  
र  
स

सरिगमपधनिस.

## ॥ कर्नाटरागवर्णनं ॥

॥ सासीगजदंतपाणिनीलिगलोमीजभूषितःकर्णे ॥  
 ॥ श्रुंगमरचीरपोषीकर्णीदेयोषितामिष्टः ॥ १ ॥  
 ॥ कृपाणपाणिर्गजदंतपत्रमेकंवहन्नदक्षिणहस्त  
 केने ॥ संस्तूयमानःस्तरचारणाद्यैःकर्णाटरागःक्षि-  
 तिलक्ष्ममूर्तिः ॥



॥गायनप्रकाश॥

॥निषादोधसंपूर्णनिषादोविहृतोभवेत्॥

॥मार्गचिमूर्खनाजेयाकर्णादोयंसरवभ्रहः॥

॥ प्राहृत ॥

॥निषाधापासूनकानाडारागाचा आरंभ संपूर्ण आहे नि  
षाधविहृत होतो एकांशाभ्रहण अंशाद्यस्यागः

आरोहि अवरोहि उलटपुलरेसेहोत.

येसस्तरसाधनिकिरुलयिगयि  
धुरपहमधस्तनलेगायनरवर०

स

निषाद नि

धैवत ध

पंचम प

मध्यम म

गांधार ग

रित्विक रि

रवर्ज स

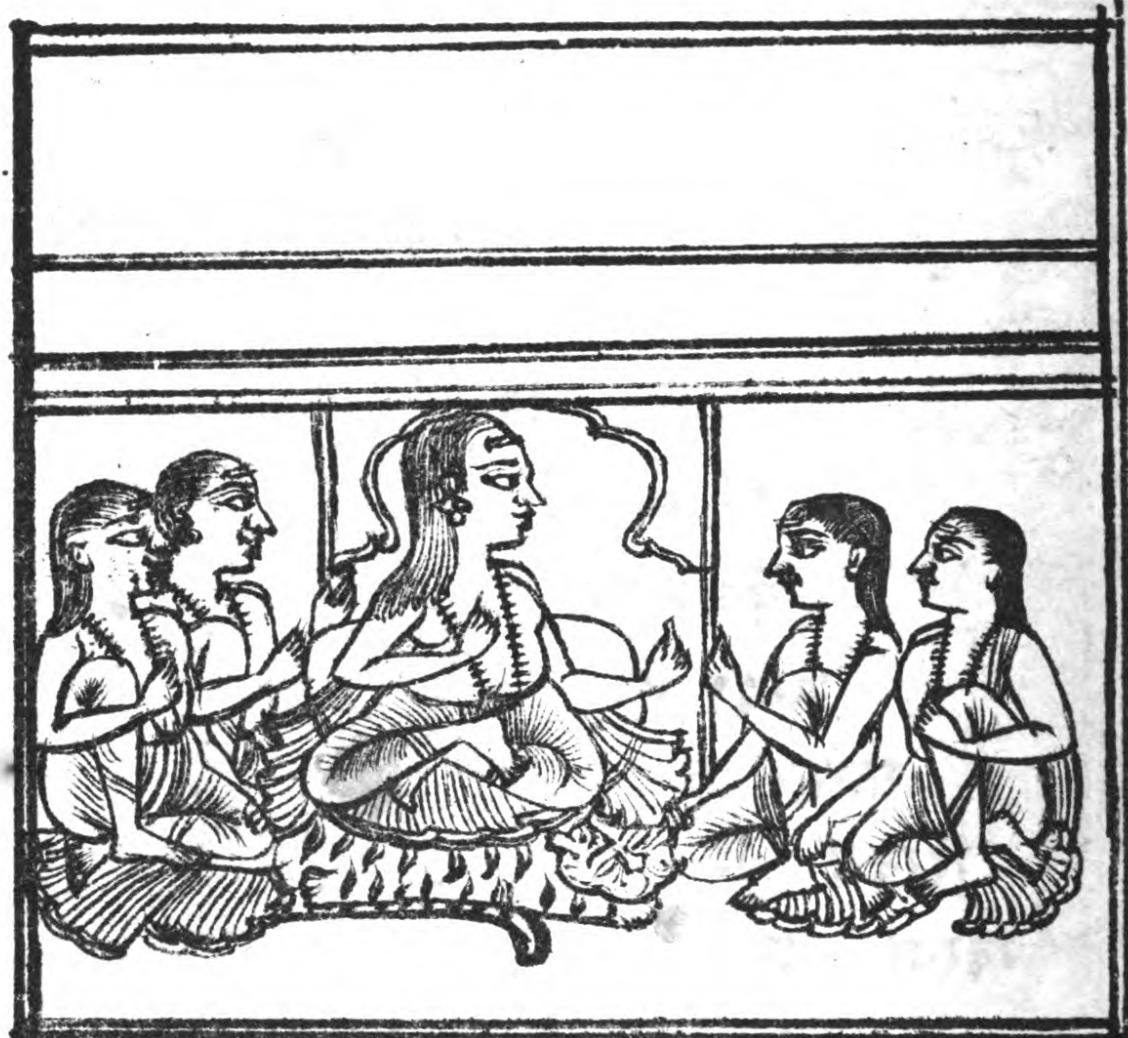
नि

निरिगमपधनि

॥ केदाररागस्त्रपवर्णनं ॥

॥ जटिलोहियोगपद्मोविधुस्कवाकलमौलिरु  
द्धसद्दसितः ॥ गंगाधरस्तपस्तपस्त्रीधानर  
तोतीवकेदारः ॥ १ ॥

॥ जटादधानः द्वातचं इमौलिर्नागोत्तरीयोधृतयो  
गपीडः ॥ गंगाधरो ध्याननिमग्नचेताः केदाररागः  
कथितस्तपस्त्री ॥ १ ॥



॥गायनप्रकाश॥

॥केदारोरिधहीनःस्यात् औडवः परिकीर्तिः॥  
॥नित्रयोमूर्ढनामार्गिकाकलीस्त्ररमं डिता॥ केचि  
त् षाडवमिच्छति केदारं ऋषभं विना॥

॥ प्राकृत ॥

॥केदारराग ऋषभ आणि धैवत येणे करुनहीन जाणावा औ  
उव ज्ञाणावा कोणाच्या मतीं षाडव रिषभविहीन गाता.

स ग म ग म प म म ग म प प म ग स ग म प ध नि स नि ध प म ग त

निसगमपनि निसगमपधनि.

॥कामोदी॥

॥पीतवसननेसेजीस्कक्षाकोकिलरवेसुइःरवाजी॥  
॥वनिरुदनकरितफिरत्येपतिच्यात्राधार्थकामवी  
राजी॥ ॥

॥पीतंवसानावसनंस्केत्रीवनेरुदंतीपिकनारदूना॥  
॥विलोकयन्तीविद्वीतिभीताकामोदिकाकांतमनु  
स्मरन्ति॥ १ ॥



## गायनप्रकाश.

॥ धांसन्यासग्रहापूर्णीपोरवीमूर्खनामता॥  
 ॥ मल्लारीनिकटेगेयाकामोदीनिगद्यते॥  
 ॥ शिवभूषणकेदारयुक्तासर्वस्त्रवप्रदा॥

## प्राकृत

॥ धैवतांसग्रहन्यास संपूर्णमल्लारिस्वरं करुत्तयुक्त  
 गावी दंकराभरणआणिकेदाररागयुक्तगायलीअ  
 सतां फारस्त्रवप्रदहोईल.

ध प  
म  
ग  
रि  
स  
नि  
ध

धनिसरिगमपध.

॥मालकंसरागरूपवर्णनं॥शामतत्तुःपीतवसनधारीहारी  
 स्त्रपुष्पयष्टिकरः॥आभातिमालकंसःस्त्रीभिःसिंहासनामीन  
 ॥दीका॥शामलतत्तुपीतवसनपुष्पाचीयष्टिधरलिकरपद्मी॥  
 ॥सिंक्षासनीविराजितयुवतीसहमालकंसनिजसद्मी॥ १॥



## मालकंसराग

॥ दौड़ी गौड़ी गुनकली खंबावती कोकब ॥ माल  
कंस की गगिनी गावत अतिदुर्लभ ॥ १ ॥

॥ मालकंसराग पांचरागिण्यास हर्वते मान आहे ॥

॥ आरक्तवणी धृत गौरयश्चिर्विरः सवीरे षुक्तप्र  
वीरः ॥ वीरे दृतो वैरिक पाल माली माली गतो  
मालब कौशि कोयं ॥

## गायनप्रकाश.

॥षङ्ख्यहांसकन्यासःसंपूर्णःकौशिकोमतः॥  
॥मूर्खनापथमाजेयाकाकलीस्वरमंडिता॥  
॥रिपहीनंतुबङ्खधागायन्त्योडवकौशिवं॥

स रि ग म प ध नि स

स नि ध म ग  
नि ध म ग म

स नि ध सा ग मग धमग मग मधनि सनि  
नि ध म ग म ग सा०

स ग म ध नि स.

## गायन प्रकाशः

॥ कलितविपंचीविपिनेललिताहरितारुणां वराहरिणैः ॥  
 ॥ धवलांगरागरचना मृदुवन्वनाभूषितातोडी ॥ १ ॥  
 ॥ तुषारकंदो ज्वलदेहयष्टिः काश्मीरकर्पूरविलिप्तेहा ॥  
 ॥ विनोदयंतीहरिणं वनांतेवीणाकराराजतितोडिकेयं ॥

तोडीरागिणी



## गायन प्रकाश

॥मध्यमांसग्रहन्यासासोवरीमूर्छनामता॥संपूर्णकथि  
तातज्ज्ञेःतोडिरुद्रीकौशिकस्यच॥ग्रहांसन्यासपञ्चस्य  
केचिद्ब्रप्रचक्षते॥

॥ मध्यमस्वराचा अंशग्रहन्यास स्वरही मध्यमाचा जा-  
णाचा कोणीषु यहांसस्वरें करून गातात.

मपधनिसरिगम्. सरिगमपधनिसा.

॥ अथगौरीरागसूपदर्णनं ॥ श्यामाकामाक्रांताकांतवियोगा  
महासूपदर्णनं ॥ मणिमयस्फुक्त्वावरणावीणापाणिः प्रवी  
णेच्चैः १ निवेशयंतीथवणेवतंसंमात्रांकुरं कोकिलनादर  
म्यं ॥ श्यामामधुश्रावितसूह्मनादगौरीयमुक्ताकिलकोहलेन १



॥गायनप्रकाश॥

॥यहांसन्यासषड्डस्यरिपहीनास्कर्वप्रदा॥  
॥प्रथमामूर्त्तिनाज्ञयागौरीसर्वीगरुदरी॥

॥यहांसन्यासस्वरषड्डाचा होयक्रुषभ आणि पंचमेक  
रुन्हीन औडव जाणावी.

स  
नि  
ध  
म  
ग  
स

सगमधनिस सरिगमपधनिस.

## गुणकलि.

॥ शोकपरायणनयनाधूलीने अंगलिसंहायजिन्चें ॥  
 ॥ सोडुनिंकद्वासदुःखाप्रियविरहंहृषीशरीरगुणकरिंचें ॥  
 ॥ शोकाभिभूतनयनारुणदीनहृष्टिर्नम्माननाधरणि  
 धूसरगात्रयष्टिः ॥ आसुक्तचारुकवर्णप्रियदुःखव  
 त्तेसिंकीर्तितागुणकरीकरुणंहृषांगी ॥ ॥



गायनप्रकाश.

॥रिधहीनागुणकरी औडवापरि कीर्तिता॥ नियहां  
शातुनन्यासा कै श्रित्पद्भुवयामता॥ रंजनीमूर्छना  
चावमालवाश्रयणीतुसा॥

॥ऋषभआणि धैवतयादेनस्वरानी विहीन औडव  
जाणावी अन्यमतीं निधाद पूर्णपद्भुवयें कस्तुमु  
क्तगातात्.

नि  
प  
म  
ग  
स  
नि  
स  
ग  
म  
स  
ग  
स

निसगमपनि मगमनिभ.

॥खं बावतीगगिणीस्त्वर्णन् ॥

॥षं बावतीस्यात्कर्वदारसज्जामौहर्यल्लवण्यविभृ  
पितांगी ॥ नादप्रियाकोकिलनादतुल्याप्रियंव  
दाकोशिकरागिणीया ॥



॥गायनप्रकाश॥

॥धैवतांसग्रहन्यासाषाडवात्यक्तपञ्चमा॥षंवाच  
तीचविज्ञयामूर्ढनापौरवीमता॥

॥धैवतांसग्रहजाणावीवपञ्चमेकस्तन्हीनहोय॥

ध  
म  
ग  
रि  
स  
नि  
ध

धनिसरिगमध.

॥ कुक्ष ॥

॥ वर्णततुरनिमंडितचं इमुखीचं पक्षजाक  
कुभा ॥ नेत्रकदक्षेपाहेपरमाहीपावलीमहाशोभा ॥

॥ स्वर्णीनमांगीरतिमंडितांगीचं इननाचं पक्षदान  
युक्ता ॥ कदाक्षिणीस्यात्परमाविचित्राहाननयुक्ता



गायनप्रकाशः

॥ धैवतांभग्रहन्यासासंपूर्णाककुभासता॥  
॥ तृनीयमृष्णनापेताश्वंगाररसमंडिना॥ १॥  
॥ अंसन्यासस्वरधैवताचाजाणाकासप्रस्वरेक  
रूनयुक्त आहेतीश्वंगाररसेकरूनयुक्तगावी.

ध प  
म ग  
रि  
स नि  
ध

धनिसरिगमपध

॥हिंडोलरागसूप्तवर्णनं॥

॥संस्कृत॥मालामशोकचंपककमलानामुद्दहन्म  
हाभृयः॥ललनांदोलितदोलालोलोहिंडोलकोगौरः॥  
॥टीका॥अशोकनीरजचंपकमालीहिंडोलराजरा  
जअसे॥चोपाळ्यामहलवितीरमणीज्याचीतनूहि  
गौरदिसे॥ १ ॥



॥हिंडोलराग॥

॥रामकलीपटमंजरी और कहे देवसारव॥ येनारी  
हिंडोल कीलालितविलावलगरव॥ १॥  
॥हिंडोलराग पांचरागिण्यासहित आहे॥

॥नितं विनीमं डितरं जिताम्लं लाम्लं रेलं क्लं ग्वमा  
दधानः॥ म्वर्चः कपोतघुनिकामयुक्तो हिंडोलरागः  
कथितो मुनीङ्गः॥

म

ग

म प ध

नि

पूर्ण नीत्र पूर्ण पूर्ण संपूर्ण  
ग ग म ध नि मा नि ध निध मग्म  
निमा ग मध नि सा नि ध म ग सा ग.

गायनप्रकाशः

॥ हिंदोल कोरिपत्यक्तः सन्धयोगदितो दुधैः ॥

॥ मूर्दुनाशु त्यमध्यादौडवः काकलीयुतः ॥

प्राणतः

॥ हिंदोलरागास ऋषभ आणि पंचम हेदोन स्वर वर्ज आ  
हेत तीनषङ्कावांचून गाऊनये हाराग औडव होय ॥

सगम धनिस कोणाच्यामतीं सगम पनिस ॥

रामकली.

॥ कांचनविभाति भास्करभूषानिलांशु कादि  
करम्या ॥ रामकृतीरनुवदंतीस्कदतीदितें  
तिकेयाते ॥ १ ॥

॥ हेमप्रभाभास्करभूषणाचनीलं निचोलं वपुषा  
वहंति ॥ कांते समीपे कमनीयकं ढामानोन्म  
ता रामकली मतेयं ॥ २ ॥



## गायनप्रकाशः

॥ षड्ग्रहां सकन्यासापूर्णी रामकर्णी मता ॥  
 ॥ मूर्खनाप्रथमाङ्गेयाकारुण्येसाप्रयुज्य  
 ते ॥ रिधेत्यक्तातु केचित्तां केचित्पञ्चम  
 वर्जितां ॥

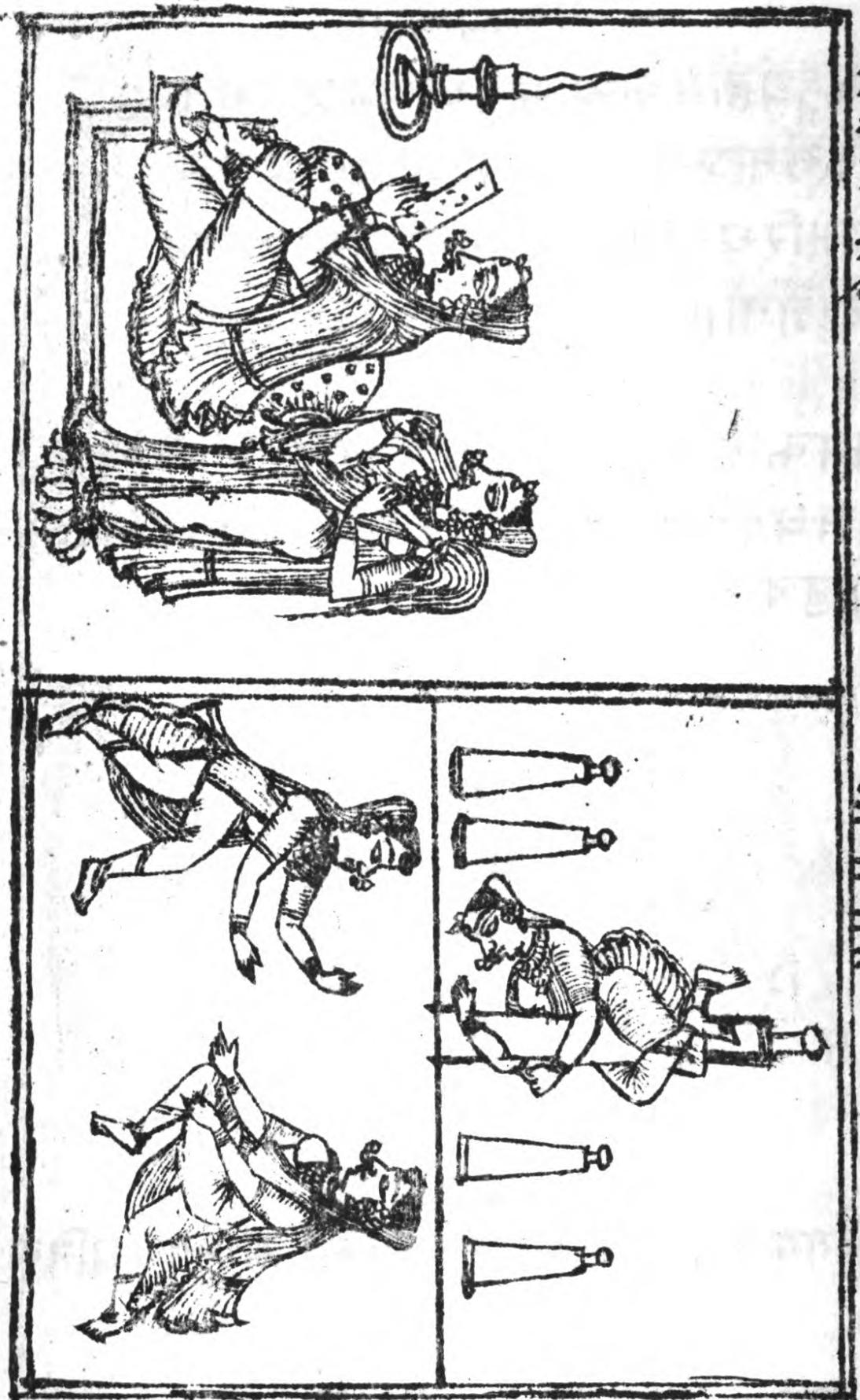
॥ रामकलीरागिणी षड्ग्रहां सत्त्वराकोणीक्र  
 षष्ठधैवतावाचूनगातात पञ्चमावाचूनही  
 ओडवगातात ॥

स  
मि स स  
ध नि नि  
म प ध ध  
ग म प म  
रि ग म रि  
स ग स रि

सरिगमपधनिम सगमपनिस सरिगमधनिस

॥पटमंजरी॥ यादेवांतपटमंजरीज  
प्रसिद्ध आहे.

जाणावा॥  
देसारब॥ देवसारबसामल्लभूती



## ललता.

॥ कुटिलां ललतां ललितो विभ्रातयातो विनीत  
तां न टयन् ॥ तु ज्ञुत पररति चिन्हो गदति वधुं  
चदुपदुःखिन्मां ॥ १ ॥

॥ आया ॥ कुटिलते ललिते सीर्डनि वदे प्रभ्रात  
समयांती ॥ पररति चिन्हे लपउनि जीन्या प्रि  
यरगल लितरविकांती ॥ १ ॥



॥गायनप्रकाश.

॥निषादांशग्रहेयंस्यादोडवारिपवर्जिता॥  
॥मूर्धनोत्तरमंशस्यात्करुणायांप्रयुज्यते॥

॥निषाधयहस्तरअंसस्तरन्यासस्तरहीतोच  
जाणावाउत्तरषङ्गाचीमूर्धना.

स  
नि नि  
ध ध  
म म  
ग ग  
स नि

निसगमधनिसनि.

## ॥ रागबिलावली ॥

॥ वेलावली विनीना ताली वनचारिणी तरलहारा ॥  
 ॥ सरव्यादर्शित हर्षण करतल धृतत त्वं ताभरणा ॥  
 ॥ संकेत ही क्षादयिते च दत्ता वितन्वती भूषणमं  
 गकेषु ॥ मुङ्गः स्मरंती स्मर मिष्टदेवं वेलावली  
 नीलसरोजकांति: ॥ १ ॥

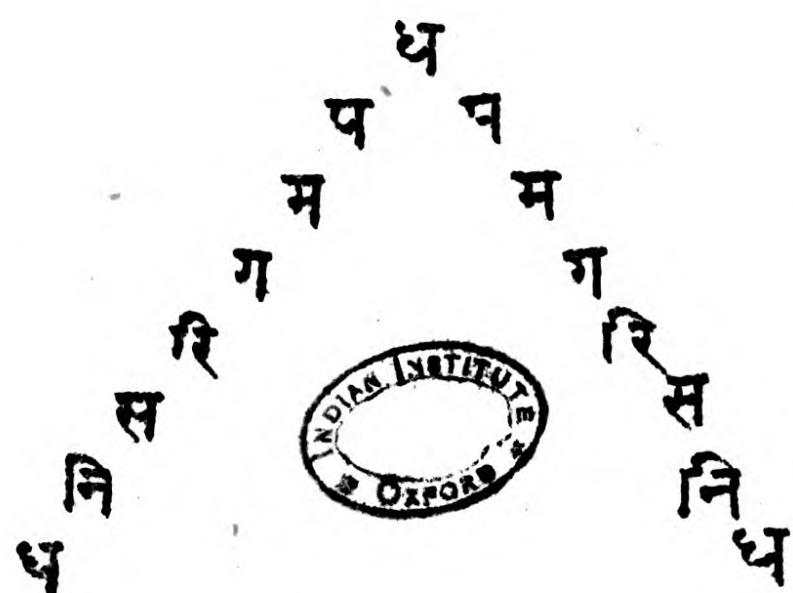


## ॥गायत्रकाण॥

॥ धैवतां स यह न्यासा पूर्णा वेला वली मता ॥  
 ॥ पौरबी मूर्छेना ज्ञेयार से चीरे प्रयुज्यते ॥

बिलावलरागान्वेलक्षण.

॥ ग्रात्यस्वर धैवत आहे व तीव्र कोमल भेदवानही  
 धैवत होय व त्याज्यस्वरही धैवत होय ध पासू  
 न भारंभ तो निषादारोह करून धैवतांत गावा.



धनिसरि गम पध.

14 B 41

14 B 41

14-B. 41.

Indian Institute, Oxford.

Bequeathed by  
The late J. Sutherland Law Esq. B.C.S.  
August 1885.

